ज्ञान विचार

किताबें पन्नों का गठजोड़ नही है बल्कि जिन्दगी के ज्ञान का गठजोड़ हैं।

PKL NO.KKR/184/2022-24

हिन्दी पाक्षिक राष्ट्रीय समाचार पत्र

सच्ची व स्टीक खबर , आप तक

सम्पादक : जरनैल सिंह

छायाकार : राजरानी

गजब हरियाणा

Contact : 91382-03233

समस्त भारत में एक साथ प्रसारित

HAR/HIN/2018/77311

WWW.GAJABHARYANA.COM ✸ 16 अगस्त 2023 वर्ष : 6, अंक : 10 पृष्ट : 8 मूल्य: 7/- सालाना 150/- रुपये ✸ email. gajabharyananews@gmail.com

प्रेरणास्रोत: डॉ. कृपा राम पुनिया IAS(Retd.), पूर्व उद्योग मंत्री हरियाणा सरकार

मार्गदर्शक: एन.आर फुले, डिप्टी कमिश्नर (जीएसटी)

मार्गदर्शक: डॉ. राज रूप फुलिया, IAS (Retd), पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार तथा वाइस चांसलर, गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार एवं चौधरी देवीलाल यूनिवर्सिटी, सिरसा

डेरा बाबा लालदास के गद्दीनशीन संत निर्मलदास जी महाराज को मिला श्री गुरु रविदास सम्मान अवार्ड

मानवता व सामाजिक कार्यों के लिए सृष्टि एजुकेशनल वेलफेयर ट्रस्ट ने किया सम्मानित

गजब हरियाणा न्यूज/भरत बेनीवाल

यमुनानगर । श्री गुरु रविदास महाराज जी की चरणछोह प्राप्त प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल डेरा बाबा लालदास कपालमोचन (बिलासपुर) यमुनानगर के गद्दीनशीन संत श्री 108 संत निर्मलदास जी महाराज को सृष्टि एजुकेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 'संत शिरोमणि गुरु रविदास सम्मान - 2023' दिया गया। गुरुघर में आयोजित मासिक सत्संग के दौरान उन्हें यह सम्मान संस्था के चेयरमैन और गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा द्वारा गजब हरियाणा समाचार पत्र के सफलतापूर्वक पांच वर्ष पूर्ण होने पर संतजी को मानवता, धार्मिक एंव सामाजिक कार्यों के लिए दिया गया। संत निर्मलदास जी की अगुवाई में हुई मासिक सत्संग में प्रसिद्ध समाजसेवी एवं बसपा नेता रवि चौधरी रहे जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा सरकार एवं जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी हिसार और ताऊ देवीलाल यूनिवर्सिटी सिरसा के पूर्व कुलपति और वर्तमान में मेधावी छात्रों की शिक्षा के लिए काम कर रहे सेवानिवृत(आई.ए.एस.) डॉ. आर.आर.फुलिया ने विशेष रूप से शिरकत की। इस अवसर पर गुरुघर की तरफ से रवि चौधरी, आरआर फूलिया, जरनैल सिंह रंगा को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। वहीं, परीक्षाओं में उत्कृष्ट स्थान हासिल करने वाले सैकड़ों बच्चों को भी सम्मानित किया गया और उन्हें प्रोत्साहित किया। वहीं, गजब हरियाणा समाचार पत्र और सृष्टि एजुकेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से पत्रकार पूर्ण सिंह, पत्रकार भरत बैनीवाल, पत्रकार शोभा और पत्रकार सिमरण को पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

शिक्षा से खुलते हैं सफलता के रास्ते : रवि चौधरी

बसपा नेता रवि चौधरी ने कहा कि आपके जीवन में अगर बदलाव आ सकता है तो सिर्फ शिक्षा से आ सकता है। शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जिससे इंसान के सफलता रास्ते खुल सकते है। वहीँ उन्होंने कहा कि अपने गुरुजनों का सम्मान करने के साथ-साथ उन्होंने माता पिता के बताए हुए मार्ग पर चलने की अपील की।

आध्यात्मिकता के साथ-साथ शिक्षा का जीवन में विशेष महत्व : फुलिया

इस मौके पर हजारों की संख्या में पहुंची संगत को सम्बोधित करते हुए यमुनानगर जिला बनने पर प्रथम उपायुक्त रहे आर.आर.फुलिया ने कहा कि भारतीय संस्कृति को अगर एक शब्द में दर्शाना है तो वह है आध्यात्मिकता यही एक तत्व है जो विश्व की अन्य संस्कृतियों, सभ्यताओं से हमको अलग करता है। लेकिन इसके साथ-साथ हमारे जीवन में शिक्षा एक अनिवार्य हिस्सा है। यह ज्ञान, कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है जो व्यक्तियों को एक सार्थक और सफल जीवन जीने में मदद करती है। शिक्षा हमें जानकारी का गंभीर रूप से विश्लेषण करने, उचित निर्णय लेने और हमारे जीवन स्तर में सुधार करने के लिए उपकरण प्रदान करती है। यह सफलता की कुंजी है और हमारे भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के बिना एक आदमी नींव के बिना एक इमारत की तरह है। शिक्षा एकमात्र आधार है जिस पर मानव जाति का भविष्य निर्भर करता है। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा कक्ष के लिए एलईडी भेंट करने की घोषणा की।

गजब हरियाणा जल्द ही दैनिक गजब हरियाणा समाचार पत्र के रूप में आपके हाथों में होगा : जरनैल रंगा

ट्रस्ट सामाजिक कार्यकर्ताओं और बच्चों को सम्मानित कर प्रेरित कर रही : रंगा

सृष्टि एजुकेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन एवं गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक जरनैल सिंह रंगा ने कहा की गजब हरियाणा पांच वर्षों से निरंतर गरीबों, आर्थिक रूप से पिछड़ों,साधनहीन, मजलूमों, दबे कुचले समाज की आवाज को बड़ी बेबाकी से देश दुनिया के सामने उठा रहा है। छात्र छात्राओं को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। अपनी समर्था अनुसार हम सबकी जिम्मेवारी बनती है की समाज को ' पे बैक टू सोसाइटी' अपना योगदान दें। गजब हरियाणा समाचार पत्र सभी के सहयोग से ही पांच वर्ष पूर्ण कर पाया है। इसी के साथ गजब हरियाणा के हर वर्ष मनाए जाने वाले स्थापना दिवस पर समाजहित कार्य करने वाले उच्चाधिकारियों , गुरु रविदास जी ,कबीर साहेब की विचारधारा , तथागत बुद्ध, ज्योतिबाराव फुले, माता सावित्रीबाई फुले, बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के विचारों को जन जन तक पहुंचाने वाले संतो, सामाजिक संस्थाओं व कार्यकर्ताओं, कमजोर वर्ग के बच्चों को शिक्षा में सहयोग करने वाली संस्थाओं व कार्यकर्ताओं, कानूनी रुप से सहयोग वाले अधिवक्ताओं, खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों, शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को सम्मानित कर प्रेरित करने का कार्य कर रहा है। उन्होंने बताया की ट्रस्ट ने अभी तक पूर्व मंत्री और आईएएस रहे डॉ कृपा राम पुनिया और पूर्व एसीएस रहे डॉ राजरूप फूलिया को 'हरियाणा रतन' से सम्मानित कर चुके हैं। पूर्व एसीएस डॉ राजरूप फूलिया और डिप्टी कमिश्नर(जीएसटी)एन आर फुले को हरियाणा गौरव सम्मान, सूरजभान नरवाल प्रधान, श्री गुरु रविदास सभा कुरुक्षेत्र और श्री 108 संत निर्मलदास जी, गद्दीनशीन डेरा बाबा लाल दास कपालमोचन को संत शिरोमणि गुरु रविदास सम्मान से सम्मानित किया है। ट्रस्ट अभी तक संतों, नेताओं, विधायकों, अधिकारियों, सामाजिक संस्थाओं , सामाजिक कार्यकर्ताओं, प्रतिभावान छात्र - छात्राओं, खिलाड़ियों सहित स्कूलों में सैंकड़ों प्रतिभावान छात्र सम्मान समारोह आयोजित कर सम्मानित कर चुके हैं। उन्होंने कहा की गजब हरियाणा समाचार पत्र को विज्ञापन, समय समय पर निकलने वाले विशेषांकों में बधाई संदेश देने वाले और विशेष सहयोग करने वाले व्यक्तियों को गजब हरियाणा समाचार पत्र के स्थापना दिवस पर विशेष रूप से आमंत्रित किए जाते हैं और उन्हें सम्मानित किया जाता है। उन्होंने बताया की गजब हरियाणा समाचार पत्र जल्द ही दैनिक गजब हरियाणा समाचार पत्र के रूप में आपके हाथों में होगा। जिसमे समाज के सभी लोगों से विशेष सहयोग की अपेक्षा रहेगी।

इस पर कीर्तनी जत्थों ने सतगुरु रविदास जी की महिमा का गुणगान किया। इस अवसर पर प्रबंधक अमरनाथ ग्यासड़ा, प्रकाश सिंह पाखी, संजीव रसूलपुर, शाश्वत चौधरी, इंद्रराज, इन्द्रसेन, मास्टर रमेश कुमार, निर्मल अम्बाला, पूर्ण सिंह नाहरा, प्रधान महिंद्रपाल नागरा, रामलाल फौजी, भरत बैनीवाल, देवी सिंह समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

20 अगस्त की रैली में पहुंचने के लिए दिया न्योता

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र । रविवार को हरियाण अनुसूचित जाति राजकीय अध्यापक संघ के राज्य कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश सरोहा व ब्लाक प्रधान राज कुमार मथाना ने लाडवा ब्लाक के गांव मुनियार पुर,गादली व कडामी गांवो मे जाकर 20 अगस्त को करनाल होने वाली रैली के लिए न्यौता दिया व सभी को इस रैली मे अधिक से अधिक संख्या मे पहुंचने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर दीपक मेहरा पूर्व सरपंच जरनैल डुडा ने सयुंक्त ब्यान मे कहा कि इस रैली मे कर्मचारी व सामाजिक संगठन विभिन्न मांगो को लेकर आन्दोलन कर रहा है जिसमे माननीय मुख्य मन्त्री हरियाणा सरकार द्वारा 12 जून 2022 व 3 फरवरी 2023 मे पदोन्नति मे आरक्षण की घोषणा को अभी तक पूरा नही किया गया। यह एक सामाजिक मुद्दा है क्योकि जब तक उपर वाले कर्मचारियो की पदोन्नति नही होगी तब तक नीचे के पद खाली नही होगे ।जिससे बैकलॉग नही बनेगा और नये बच्चो को भर्ती का अवसर नही मिल पाएगा। कौशल रोजगार निगम को बन्द करके सभी विभागो मे नियमित भर्ती की जाए ताकि एस सी को 20 प्रतिशत कोटा पुरा मिल सके ।हरियाण प्रदेश मे 45हजार बैकलॉग के पदो को स्पेशल भर्ती के द्वारा जल्द से जल्द भरा जाए ताकि युवाओ को रोजगार मिल सके। रणबीर सिंह नम्बरदार खैरी ने कहा कि महाविद्यालय व विधालय मे मिलने वाली छात्रवृत्ति व प्रोत्साहन राशी जो पिछले 7 वर्ष से समय पर नही मिल रही है उसे विधार्थियो के खाते मे डाला जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा संवैधानिक मांगो को पुरा न करने के कारण समाज के लोगो मे रोष है इसलिए इस रैली मे

अधिक से अधिक संख्या मे भाग लेगे। ब्लाक प्रधान राज कुमार मथाना व ईश्वर सरोहा ने कहा कि चिराग योजना को बन्द करके विधालय के स्तर मे सुधार किया जाए। पुरानी पैशन को बहाल किया जाए। सभी प्राथमिक विद्यालय मे बिना शर्त के मुख्य शिक्षक के पद बहाल किए जाए। इस अवसर ओम प्रकाश सरोहा, गादली सरपंच खुशी राम,राज कुमार मथाना,जरनैल सिंह डुडा, ईश्वर सरोहा, चमन लाल, रिंकु,जल सिंह , राम चन्द्र, रणजीत सिंह,कर्म जीत, रोशन लाल, राम पाल हुक्म चन्द बबली, आदि उपस्थित रहे।

सभी देश व प्रदेश वासियों को हमारी और से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

बी के भास्कर,पूर्व बैंक अधिकारी

सुरजभान कटारिया सदस्य,सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार

एडवोकेट जिले सिंह सभरवाल,पूर्व बैंक अधिकारी

रमेश कुमार फुले ,पूर्व अधीक्षक अभियंता

नारायणा गुरु जयंती विशेष
(20 अगस्त, 1854 – 20 सितम्बर, 1928)

आज भारत में सबसे ज्यादा साक्षरता दर वाला राज्य केरल जहाँ सिर्फ महिलाओं की साक्षरता दर राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर की तुलना में कहीं अधिक है । जहाँ शिशुओं की मृत्यु दर भारत के और राज्यों की तुलना में सबसे कम है और महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है । कुछ दशक पूर्व केरल की हरी-भरी धरती सामाजिक और आर्थिक विषमताओं का एक जीता-जागता उदाहरण थी । स्वामी विवेकानंद ने तो इसे एक 'पागलखाने' की संज्ञा दे डाली थी । जहां एक तिहाई से ज्यादा आबादी अछूत मानी जाती थी और उनके लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों के दरवाजे बंद थे । वे न केवल सरकारी नौकरियों से बाहर रखे जाते थे, बल्कि हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा करने, मंदिर जाने तक पर पाबंदी थी । सार्वजनिक कुंओं का इस्तेमाल वे कर नहीं सकते थे, इन जातियों के मर्द और औरतों के लिये कमर से ऊपर कपड़े पहनना तक बड़ा गुनाह था, गहने पहनने का तो सवाल ही नहीं था । इन्हें अछूत तो समझा जाता ही था, उनकी परछाइयों से भी लोग दूर रहते थे । तथाकथित बड़े लोगों से कितनी दूर खड़े होना है वह दूरी भी जातियों के आधार पर निर्धारित थी, यह 20 फुट से 72 फुट तक था । कुछ जातियों के लोगों को तो देख भर लेने से छूत लग जाती थी । उन्हें चलते समय दूर से ही अपने आने की सूचना देनी पड़ती थी, वे लोग जोर जोर से चिल्लाते जाते थे 'मेरे मालिकों, मैं इधर ही आ रहा हूं, कृपया अपनी नजरें घुमा लें ।' ये लोग अपने बच्चों के सुन्दर और सार्थक नाम भी नहीं रख सकते थे, नाम ऐसे होते थे जिनसे दासता और हीनता का बोध हो । ऐसे किसी भी सामाजिक नियम का उल्लंघन करने पर मौत की सजा निर्धारित थी, भले ही उल्लंघन गलती से हो गया हो । वहाँ घृणित जाति-व्यवस्था प्रचलित थी और इसी ऊँच नीच की भावना तथा सामाजिक कुरीतियाँ प्रचलन में होने के कारण दलित और पिछड़ी जाति के लोगों के साथ क्रूर अमानवीय व्यवहार होते थे ।

केरल में चार वर्णों- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र- का आदर्श घोषित रूप लागू नहीं था । वहां पूरे समाज का बंटवारा ब्राह्मण-गैर-ब्राह्मण में था । नंबूदरी ब्राह्मणों के पास जमीन का मालिकाना हक था था और वे मंदिर एवं मदिरों की संपत्ति के भी मालिक थे । राज्य और राजाओं पर उनका कड़ा शिंकजा था । वे महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मणों की तरह ही थे । नायर काश्तकार कहे जाते थे और सैन्य भूमिका का भी निर्वाह करते थे । लेकिन वर्ण-व्यवस्था के अनुसार वे शूद्र ही थे । वे खेतों के मालिक थे, लेकिन वे उत्तर भारत के ऊंची जाति के लोगों की ही तरह खेतों में काम नहीं करते थे । उनके खेतों में सारा काम अन्य गैर-ब्राह्मण- विशेषकर दलित करते थे । बीच का एक स्तर था, जिसमें इजावा भी शामिल थे, जिन्हें एक निश्चित समय के लिए लगान पर खेती करने को मिलती थी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति थोड़ी बेहतर थी । कुछ दलित और आदिवासी इससे भी वंचित थे, जिन्हें अछूतों में भी अछूत का दर्जा प्राप्त था । इन दलितों को कुरावा, पुलाया और परिया आदि के रूप में जाना जाता था । इसके साथ आदिवासी भी थे, जिन्हें दलितों से भी बदतर दर्जा नंबूदरी ब्राह्मणों ने दे रखा था ।

उत्तर भारत के विपरीत केरल में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य तीनों तथाकथित उच्च वर्णों का विशेषाधिकार नंबूदरी ब्राह्मणों ने अपने हाथ में ले रखा था । फिर भी समझने की आसानी के लिए कहा जा सकता है कि विभिन्न समुदायों द्वारा संपन्न किए जाने वाले कार्यों और आर्थिक हैसियत के आधार पर देखें तो नायरों की स्थिति उत्तर भारत के क्षत्रियों जैसी थी, लेकिन शास्त्रीय एवं सामाजिक हैसियत शूद्र जैसी । इजावा जाति को आर्थिक हैसियत और सामाजिक बंटवारे के श्रेणीक्रम के आधार पर उत्तर भारत की अन्य पिछड़ी वर्ग या ओबीसी की तरह देख सकते हैं, लेकिन बहुत सारे मामलों में उनकी हैसियत भी दलितों के जैसी थी, जैसे मंदिर प्रवेश एवं सरकारी नौकरी में निषेध आदि । ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण के बंटवारे के हिसाब से ही सारे अधिकार एवं कर्तव्य निर्धारित होते थे । इस तरह केरल में अपने शास्त्रीय आदर्श (मनु संहिता) के अनुरूप ब्राह्मण ही भू-देवता था ।

ब्राह्मणों और गैर-ब्राह्मणों के शीर्ष पर विराजमान और सब कुछ तय करने वाले नंबूदरी ब्राह्मणों ने यह भी तय कर रखा था कि किस गैर-ब्राह्मण को उनसे कितनी फीट की दूरी पर रहना है । इजावा लोगों को नंबूदरी ब्राह्मणों से कम से कम 20 से 36 फीट की दूरी पर, चेरूमन और पुलाया लोगों को 64 फीट की दूरी पर और नायडी लोगों को 72 फीट की दूरी पर रहना था । इससे कम दूरी होने पर नंबूदरी अपवित्र हो जाते थे । कुछ जनजातियां ऐसी थीं, जिनके देखने मात्र से नंबूदरी ब्राह्मण अपवित्र हो जाते थे । सिर्फ नायर ऐसे गैर-ब्राह्मण थे, जिनके छूने पर ही ब्राह्मण अपवित्र होते थे ।

केरल में गैर-ब्राह्मणों के बड़े हिस्से के लिए छाता, जूता, सोने के आभूषण आदि के इस्तेमाल की सख्त मनाही थी । इसका उल्लंघन करने वालों को सख्त आर्थिक एवं शारीरिक दंड दिया जाता था । गैर-ब्राह्मणों का घर एक मंजिल से अधिक ऊंचा नहीं हो सकता था, वे गाय का दूध नहीं पी सकते थे, महिलाएं स्तन नहीं ढंक सकती थीं, वे ऊंची जाति की महिलाओं की तरह अपने सिर पर पानी का घड़ा नहीं रख सकती थीं । अधिकांश गैर-ब्राह्मणों को सरकारी नौकरियों में प्रवेश की इजाजत नहीं थी । मंदिरों में प्रवेश की मनाही थी । दलित-आदिवासियों की कौन कहे, शूद्र कही जाने वाली जाति इजावा भी मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकती थी, ऐसा करने की कोशिश करने वालों का वध कर दिया जाता था ।

इस प्रकार गैर-ब्राह्मणों का एक बड़ा हिस्सा बहुत सारी सार्वजनिक जगहों का इस्तेमाल नहीं कर सकता था, इसमें मुख्य रास्ते भी शामिल थे, जिन पर गैर-ब्राह्मणों का एक बड़ा हिस्सा नहीं चल सकता था। यहां तक कि गैर-ब्राह्मणों की पत्नियों को पहली रात नंबूदरियों के साथ बिताने का प्रावधान भी था।

ऐसे समय में वहाँ श्री नारायण गुरु जैसे संत और समाज सुधारक का जन्म होता हैं । जिन्होंने केरल को ऐसे घृणित सामाजिक कुरीतियों से निकालने में बहुत बड़ा योगदान दिया । श्री नारायण गुरु का 'मानव की एक जात, एक धर्म और एक ही ईश्वर है अर्थात सभी जन बराबर हैं' सिद्धान्त का प्रसार किया ।

नारायण गुरु का जन्म केरल में तिरुअनंतपुरम से करीब 15 कि.मी. उत्तर- पूर्व में स्थित एक छोटे से गांव चेंपाजंती में 20 अगस्त, 1856 को इजवा समुदाय में हुआ था । उनके पिता मदन असन एक किसान थे, वे प्रसिद्ध आचार्य (गुरुकुल के) और संस्कृत के विद्वान थे, आयुर्वेद और ज्योतिष के ज्ञाता भी थे । नारायण गुरु की मां एक सरल महिला थीं । अपने माता-पिता की चार संतानों में एकमात्र बालक थे नारायण अथवा 'नानू' । नानू एक आम बालक की तरह पले-बढ़े । उनके पिता मदन अशान उनके पहले शिक्षक थे । उनके पिता मलयालम और तमिल के साथ पाली भाषा के अच्छे ज्ञाता थे । ये तीनों भाषाएं नाणु को विरासत में मिली थीं । बाद में श्रीनारायण गुरु संस्कृत एवं अंग्रेजी में भी महारत हासिल की । बचपन से नानु के भीतर प्रखर जिज्ञासा भाव और गहरी संवेदनशीलता थी । प्रकृति के विविध रूप उन्हें अपनी ओर खींचते थे । 5 वर्ष की आयु में उन्हें गांव के स्कूल में मलयालम में प्राथमिक शिक्षा के लिए भर्ती किया गया । वहां उन्होंने संस्कृत भी पढ़ी । थोड़ा बड़ा होने पर इन्होंने गांव के पशुओं को चराने की जिम्मेवारी ले ली । जब ये गायों को चराने के लिए जंगल में जाते और देखते की गायें आराम से चारा चार रही हैं अथवा जुगाली कर रही हैं तो ये स्वयं एक तरफ बैठकर संस्कृत श्लोक याद करते रहते । बाद में इन्हें खेतों में हल चलाने का काम मिल गया । 15 वर्ष की आयु में माता के देहान्त के बाद उनके मामा कृष्ण वेदयार (आयुर्वेदाचार्य) ने उनकी देखभाल की । कृष्ण वेदयार को अपने भांजे की अप्रतिम प्रतिभा का जल्दी ही पता लग गया । अतः नानू को उच्च शिक्षा के लिए करूनगपल्ली में एक योग्य अध्यापक रमण पिल्लै के पास भेज दिया ।

रमण पिल्लै एक उच्चवर्ण हिन्दू थे । चूंकि नानू जन्म से अछूत था अतः उसे अपने गुरु के घर के बाहर रहकर अध्ययन करना पड़ा । नानू एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी सिद्ध हुआ और उसने अपने सभी साथियों से आगे निकलकर शिक्षकों के सामने संस्कृत में अपनी विद्वत्ता सिद्ध कर दी । संस्कृत में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् 1881 में नानू अत्यधिक बीमार पड़ गये और उसे वापस घर लौटना पड़ा ।

रोगमुक्त होने के बाद उन्होंने अपने पैतृक गांव में और आस-पास के क्षेत्रों में छोटे-छोटे विद्यालय खोलने का निर्णय लिया । यहीं से उन्होंने स्थानीय समाज के बालकों, विशेषकर पिछड़े वर्ग के बालकों में ज्ञान और शिक्षा का प्रसार आरम्भ किया । अपने समकक्ष बच्चों को लिखना पढ़ना सिखाना शुरू किया । तब ये नानूअशान (नानू अध्यापक) के नाम से प्रसिद्ध हो गए । रहने के लिए इन्हें पास के ही ज्ञानेश्वरम मंदिर के परिसर में जगह मिल गई । तब इन्होंने मंदिर में श्रीमद्भगवतगीता का अध्यापन शुरू किया ।

नारायण गुरु का विश्वास था कि भक्ति की शिक्षा प्रस्थानत्रयी अर्थात वेदान्त सूत्र, उपनिषद् और गीता से ही मिलती है । वेद का प्रतिपाद्य विषय कर्म था । उपनिषदों ने इस में ज्ञान का पुट मिलाया और भक्ति जनता के स्तर से उठकर ऊपर पहुंची । इन तीनों का समन्वय गीता में किया गया । इस में कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग की बात कही गई । गीता का समन्वय मूलक ही इस की मौलिकता है । शंकराचार्य ने गीता के इसी सिद्धान्त का प्रचार प्रसार करते हुए अद्वैतवाद की या स्थापना की थी । श्री नारायण गुरु ने इसी को अपने दर्शन में नए रूप में प्रस्तुत किया । उन का बल गीता के संदेशों पर अधिक था । वे न तो कठोर कर्मकाँड़ी थे और न ही कट्टर वेदांती । वे कभी सन्यास लेकर जंगलों में जा कर नहीं रहे । उन का विश्वास आसक्ति रहित कर्म करने में था । उन्होने अपने 'आत्मोपदेशक शतक' में बार बार यही कहा कि ज्ञान प्राप्ति ही सब कुछ नहीं है । ज्ञान का अर्थ है आत्म निरीक्षण अर्थात आपने अंदर झांक कर देखना, स्वयं को पहचानना और अपने स्व कि अनुभूति करना यही वास्तविक ज्ञान है ।

श्री नारायण गुरु का जीवन दर्शन मुख्यतः तीन भागों में देखा जा सकता है ।

पहला है एक भक्त का, एक ऐसा भक्त जो संसार के दैनिक झगड़ों टंटों से दूर, शांति प्रद स्थानों पर, जंगलों में, पर्वतों की कन्दराओं में, सुनसान धीमी बहती नदी के तट पर अथवा इसी प्रकार के निर्जन स्थानों पर सत्य को ढूँढ़ता रहता है ।

दूसरा भाग जब मनुष्य एक तपस्वी हो जाता है, एक वास्तविक योगी बन जाता है । कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषूकदाचन- जब वह गीता के इस सूत्र को अपना धर्म मान लेता है ।

तीसरा भाग वह है जब वह वास्तविक रूप से कर्म में विश्वास रखते हुए संसार के मोह माया से हट कर एक ज्ञानी बन जाता है । लेकिन उसे समाज की आवश्यकता अथवा समाज की गतिविधि का भी ज्ञान रहता है । यह एक धर्म प्राण बौद्धिक का रूप है ।

नारायण गुरु की रचनाओं में मनुष्य के इन तीनों रूपों की झलक है । उनके काव्य में भक्ति भाव की प्रधानता है ही साथ में मनुष्य की आंतरिक हृदय की दिव्य ज्योति की भी सुगंध है । 'अनुभूमि दशकम'' अद्वैत दीपिका' तथा 'स्वानुभूति गीति' में इसी दिव्य ज्योति का आभास मिलता है । 'कुंडलिनी पटटू' नाम की काव्य रचना में पातंजलि ऋषि के योग साधना के छह सोपानों की चर्चा की गई है । उनकी अन्य रचनाएँ हैं दर्शन माला, आत्मोपदेश शतकम, दैव दशकम, आदि । श्री नारायण गुरु आचार्य शंकर के अद्वैतवाद में विश्वास रखते थे लेकिन एक अंतर के साथ । आचार्य शंकर ने अद्वैत दर्शन को विश्व में भारत के एक विशेष आध्यात्मिक योगदान के रूप में प्रस्तुत किया । इस प्रकार उन्होंने देश में अपने मत अवलंबियों का एक बौद्धिक वर्ग बना दिया । श्री नारायन गुरु ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया लेकिन इसे मूलतः दीन, हीन, संत्रस्त, तथा पीड़ित जन साधारण के हित को ध्यान में रख कर ।

जब इन्हें समय मिलता तो ये जीवन के रहस्यों, उन के कारणों, और निराकरण के उपाय ढूँढ़ते रहते । मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? यह जीवन क्या है ? कितने दिनों के लिए है ? कहाँ से आता है ? कहाँ जाता है ? संसार में दुःख क्यों है ? सुख क्या है ? इस तरह के प्रश्न सदा ही इन्हें विचलित करते रहते । कुछ समय पश्चात वे अपने इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए घर का त्याग करके नानू आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में निकल गए । नारायण गुरु जीवन के तीस वर्षों तक यायावर की भांति इधर से उधर घूमते रहे । रात हो या दिन, कभी इस स्थान पर तो कभी उस स्थान पर, कभी समुद्र तट पर तो कभी पर्वतों पर, कभी वन प्रांतरों में तो कभी कन्दराओं में, कभी ध्यानावस्थित तो कभी विचार विमर्श में लीन । विद्वानों ने इन्हें गीता के 'अनिकेत स्थित प्रज्ञ' कहा । उन्होंने योग-शिक्षा ली, मारूतवमलै की गुफाओं में साधना की, कठोर अनुशासन का व्रत साधा । साधना मे उनको ज्ञान हुआ कि सभी मानव एक जैसे पैदा होते है । कुछ धूर्त लोगों ने जाति और उपजाति बनाकर श्रम करने वाले मानवों को जातियों और उप-जातियों मे विभक्त कर दिया है और उनको शिक्षा, अध्यात्म और सम्मान जनक जीवन से दूर कर गुलाम बना दिया है । यह बेड़ि या ईश्वरीकृत नहीं है बल्कि कुछ धूर्तों द्वारा अपने स्वार्थ मे बनाई गयी है इसलिए मुझे इन तथाकथित ऊंची जाति द्वारा बनाई गयी इन बेड़ियो को तोड़ने के लिए लड़ना चाहिए । यह निश्चय लेकर नारायण गुरु लोगों के बीच लौटे । वे गांव-गांव घूमे, जो भोजन मिला, उसे खाया; समाज के अंतिम व्यक्ति के साथ रहे, पिछड़े वर्ग से घुले-मिले । सभी लोग उनसे प्रभावित हुए, उनके प्रति श्रद्धा जगी ।

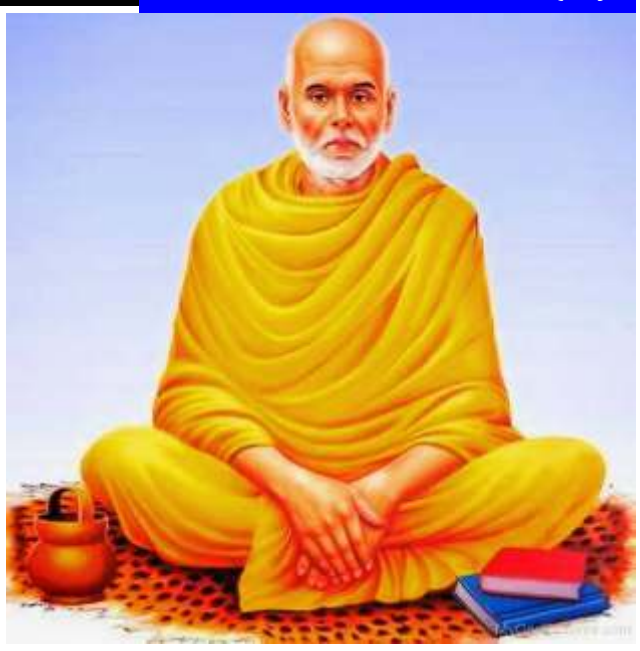

इन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया समाज से अशिक्षा, अज्ञानता, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, दकियानूसी रीति रिवाज और रूढ़िवादिता का उन्मूलन । स्वामी जी हृदय से अत्यंत दयालु, शान्त और सरल स्वभाव के थे लेकिन साथ ही इच्छा शक्ति में दृढ़ और संकल्पशील थे । इन्होंने अनेक छात्रों को संस्कृत और विज्ञान पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया । मुख्य उद्देश्य था समाज में चेतना जागृत करना । इन का जीवन दर्शन शाश्वत मूल्यों पर आधारित था इस लिए इन्हें एक व्यावहारिक योगी माना जाता है । श्री नारायण गुरु अपनी जीवन पद्धति और क्रिया कलापों के कारण एक शुद्ध, सात्विक और सरल वेदांती थे । आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में अंतर्विरोध और पारस्परिक विरोध के रूप में अवरोध तो आते ही हैं । ये नारायण गुरु के सामने भी आए ।

इस पर स्वामी जी ने कुछ सूत्र बना रखे थे (1) 'सभी धर्मों का लक्ष्य एक है । एक बार जब सभी नदिया सागर में मिल जाती हैं तो सब के अंतर समाप्त हो जाते हैं ।' (2) 'धर्म का उद्देश्य है मनुष्य के विचारों को शिखर तक ले जाना ।' (3) 'जिस व्यक्ति ने अंतिम सत्य का अनुभव कर लिया, उसे फिर किसी धर्म की आवश्यकता नहीं होती । वह अन्य लोगों के लिए पथ प्रदर्शक बन जाता है ।'

समाज कार्य में सबसे पहले नारायण गुरु ने तिरुअनंतपुरम से 20 कि.मी. दक्षिण में आरूविपुरम में नेय्यार नदी के तट पर 1888 में शिवलिंग की स्थापना की और इस मान्यता को ठुकरा दिया कि केवल एक ब्राह्मण ही पुजारी हो सकता है । ब्राह्मणों के विरोध पर उन्होंने कहा कि ये ब्राह्मणों के शिव नहीं हमारे शिव है । हिन्दू मंदिरों में जिनका प्रवेश वर्जित था, वे इस मंदिर में निर्बाध आ सकते थे । मंदिर के ही निकट उन्होंने एक आश्रम बनाया तथा एक संगठन बनाकर मंदिर-संपदा और श्रद्धालुओं के कल्याण की व्यवस्था की । यही संगठन बाद में श्री नारायण धर्म परिपालन योगम् (एस.एन.डी.पी.) के नाम से जाना गया, जो नारायण धर्म का प्रसार करने लगा । अपने अनुयायियों को उन्होने प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी । एस.एन.डी.पी. के हर इकाई को अनिवार्य रूप से एक स्कूल औए एक पुस्तकालय कायम रखने की निर्देश नारायणा गुरु ने दिया ।

1904 में नारायण गुरु ने क्विलोन (आज कोझीकोड) के एक तटीय उपनगर वर्कला में एक शांत, सुरम्य पर्वतीय स्थल शिवगिरि में अपनी सार्वजनिक गतिविधियां केन्द्रित की । 1928 में अपनी महासमाधि तक नारायण गुरु ने यहीं रहकर साधना की थी । शिवगिरि में नारायण गुरु ने दो मंदिरों और एक मठ की स्थापना की । शिवगिरि आकर ही रविन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी ने नारायण गुरु के दर्शन किए थे । 1920 में त्रिशूर में उनके द्वारा स्थापित कारामुक्कू मंदिर में किसी देवता की प्रतिमा नहीं बल्कि एक दीपक स्थापित किया गया था, जिसका संदेश था-चहुं ओर प्रकाश ही प्रकाश हो । 1922 में मुरुक्कुमपुझा में बनाए गए मंदिर में देव प्रतिमा की जगह 'सत्य, धर्म, प्रेम, दया' लिखवाया गया था । 1924 में उनके द्वारा स्थापित अंतिम मंदिर कलवनकोड मंदिर में उन्होंने गर्भ गृह में एक दर्पण लगवाया ।

सामाजिक प्रगति के लिए नारायण गुरु ने तीन उपाय सुझाए थे- संगठन, शिक्षा और औद्योगिक विकास । आज केरल में दिख रहा सामाजिक-आर्थिक-शैक्षणिक विकास का श्रेय नारायण गुरु और उनके द्वारा स्थापित श्री नारायण धर्म परिपालन योगम् संस्था को जाता है । श्री नारायण गुरु ने महसूस किया दलित और पिछड़े तबके के लोगों में अशिक्षा की वजह से अपने ऊपर होने वाले घृणित अमानवीय कुरीतियों को अपनी नियति मानने लगे थे । शिक्षा का अभाव और अच्छे रोजगार के अवसर ना होने की वजह से आर्थिक विपन्नता और अपने ऊपर थोपे गये अमानवीय सामाजिक नियमों के कारण वे गंदे ढंग से रहने, जीने और खाने के आदी हो गये थे । सभी अधिकारों से वंचित इनकी व्यथा और उनपर होने वाली घृणित पीड़ा को उन्होंने गहराई से महसूस किया । उनका कहना था कि छीनकर लिये गये अधिकार स्थाई नहीं होते, बल्कि दूसरी और समस्याओं को जन्म देते हैं ।

श्री नारायण गुरु स्वयं पिछड़ी जाति के होने के कारण वे इस समुदाय के दुःख दर्द को भलीभाँति समझते थे । यहाँ तक की उनकी प्रारम्भिक शिक्षा उस वक्त के प्रसिद्ध ज्योतिषी और विद्वान के यहाँ हुई जिसके घर में बैठकर पढ़ने की इजाजत तक नहीं थी । इनसे इन्होंने संस्कृत भाषा की शिक्षा ग्रहण की । वे संस्कृत, मलयालम और तमिल भाषा के ज्ञानी थे और इसी भाषा में भक्ति काव्यों की रचना की ।

'मेरा इस देश के बहिष्कृत लोगों से इतना ही कहना है कि वे कष्ट उठा कर भी शिक्षा ग्रहण करें । अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दिलाएं, सभी लोग ज्ञान प्राप्त करें । इसी शिक्षा से वे अपने मानव उचित अधिकारों की रक्षा कर सकेंगे जीवन के सभी क्षत्रों में उत्थान कर सकेंगे । अन्धविश्वास और अंधश्रधा से लड़ने की ताकत भी हमें शिक्षा और ज्ञान से ही प्राप्त हो सकती है ।' लोगों ने शिकायत की कि उनके बच्चों को स्कूलों में नहीं जाने दिया जाता, उन्होंने कहा

'अपने बच्चों के लिये स्कूल स्वयं बना लो और इतनी अच्छी तरह चलाओ कि वे भी तुम्हारे स्कूलों में अपने बच्चों को भेजने को इच्छुक हो जाएं.'

लोगों ने कहा कि उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता, उन्होंने कहा कि न तो जबर्दस्ती प्रवेश करने की जरूरत है और न प्रवेश की अनुमति के लिये गिड़गिड़ाने की आवश्यकता है, अपना मंदिर स्वयं बना लो । जब उनसे कोई कहता कि उनको मंदिरो में जाने से रोका जाता हैं तो वो कहते कि' अपना मंदिर क्यों नहीं बना लेते' । दलित अपना मंदिर तो बना सकते थे लेकिन ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि देवी देवताओ की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित नहीं कर सकते थे । इसीलिए श्री नारायण गुरु ने मंदिरो के अंदर देवी देवताओ की मूर्तियों के बदले दर्पण लगवाने को कहा । उनका विश्वास था कि मनुष्य स्वयं परमात्मा हैं और मानव मात्र की सेवा करके ही देवत्व को प्राप्त किया जा सकता हैं । श्री नारायण गुरु ने 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम' का गठन किया जिसने मंदिरो में दलितों के प्रवेश अधिकार को लेकर आंदोलन शुरु किया । उन्होंने समस्त मानवता के लिये 'एक जाति, एक धर्म और एक भगवान' का सिद्धांत प्रतिपादित किया । नारायण गुरु मूर्तिपूजा के विरोधी थे । लेकिन वह ऐसे मंदिर बनाना चाहते थे, जहां कोई मूर्ति ही न हो । वह राजा राममोहन राय की तरह मूर्तिपूजा का विरोध नहीं कर रहे थे । वह तो अपने ईश्वर को आम आदमी से जोड़ना चाह रहे थे । आम आदमी को एक बिना भेदभाव का ईश्वर देना चाहते थे । मदिरा को जहर बताते हुये उन्होंने अपने अनुयायियों मदिरा पान, मदिरा निर्माण और मदिरा व्यापार न करने का उपदेश दिया ।

एक बार महात्मा गाँधी वैकुम सत्याग्रह सम्बन्ध में श्री नारायण गुरु से मिलने शिवगिरि आये, नारायण गुरु के कार्यों की सफलता से प्रभावित महात्मा गांधी उनसे मिलकर बातचीत करने को बहुत इच्छुक हुए और उन्होंने पूछा कि क्या गुरुजी अंग्रेजी जानते हैं, गुरुजी ने पलटकर पूछा कि क्या गांधीजी संस्कृत में बातचीत करेंगे? दोनों के बीच बहुत लम्बी बातचीत हुई । महात्मा गाँधी ने श्री नारायण गुरु से पूछा कि 'क्या किसी हिन्दू शास्त्र में अस्पृश्यता के समर्थन में आदेश हैं' । महात्मा गाँधी यह भी जानना चाहते थे कि दलितों की अस्पृश्यता मिटाने के लिए और क्या करना चाहिए और आखिर में उन्होंने पूछा कि 'क्या हिन्दू धर्म में बिभिन्न जातियों का होना प्रकृति के नियमानुसार नहीं हैं' । महात्मा गाँधी ने इसकी पुष्टि के लिए एक पेड़ के छोटे और बड़े पत्ते का उदाहरण दिया ।

श्री नारायण गुरु ने महात्मा गाँधी के सारे प्रश्नो का एक एक करके उत्तर दिया । उन्होंने कहा कि 'कोई भी हिन्दू शास्त्र अस्पृश्यता का समर्थन नहीं करता हैं । अस्पृश्यता मिटाने के लिए और दलितों की उन्नति के लिए उन्हें शिक्षा और धन की आवश्यकता हैं । मेरे द्वारा स्थापित मंदिर में कोई भी आ सकता हैं' । श्री नारायण गुरु ने वर्णाश्रम व्यवस्था के तहत विभिन्न जातियों को अस्वीकार किया और उन्होंने कहा कि 'पेड़े के छोटे या बड़े पत्तो में एक ही रस होता हैं, अर्थात ब्रह्म एक हैं, एक ही जाति है ।'

श्री नारायण गुरु से मिलने के बाद महात्मा गांधी ने लिखा 'अति सुन्दर ट्रावनकोर रियासत का भ्रमण और आदरणीय श्री नारायण गुरु से मुलाकात मेरे जीवन की अति सौभाग्यशाली घटनाओं में से एक है ।'

विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर ने श्री नारायण गुरु के बारे में कहा था कि 'मैंने विश्व के विभिन्न स्थानों की यात्रा की है, इन यात्रा के दौरान मुझे अनेक संतों और विद्वानों के दर्शन करने का अवसर मिला है । लेकिन मैं यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि मुझे अभी तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो केरल के स्वामी श्री नारायण गुरु से आध्यात्मिक रूप से अधिक महान हो अथवा आध्यात्मिक उपलब्धियों में उन के समकक्ष भी हो ।' गुरुदेव टैगोर और स्वामी श्री नारायण गुरु की भेंट 1922 में हुई थी । रोम्यारोला जब भारत आए तो वे भी नारायण गुरु से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके । रोम्यारोलां ने लिखा है श्री नारायण गुरु के उपदेश आचार्य शंकर के दर्शन से प्रभावित थे । यह कहा जा सकता है कि वे कर्मशील, धार्मिक तथा बौद्धिक ज्ञानी थे । उन्हें 'स्व' का ज्ञान था । उन्हें सामाजिक आवश्यकता की जानकारी और लोगों की नब्ज की पहचान थी । उन्होने दक्षिण भारत के दबे हुए लोगों को उठाने में महान योगदान दिया । गांधी जी ने उन्हें सदैव श्रद्धेय श्री नारायण गुरु के नाम से ही जाना और अपने हरिजनोद्धार की गतिविधि से उन के दृष्टिकोण को स्वीकार किया है । मूलूर पद्मनाभ पणिक्कर इनको बचपन से ही जानते थे । वे कहते थे की उन्हें बचपन से ही दूसरों की सहायता करना अच्छा लगता है ।

श्री नारायण गुरु ने अपने कार्यकर्मों और उपदेशों से केरल की दलित और पिछड़े वर्ग के लोगों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता पैदा की । इन्ही के प्रयत्नों से आने समय में केरल में दलित जातियों के लिए मंदिरों के द्वार खोल दिये गए और कुछ समय बाद कानून भी पारित कर दिया गया ।

श्री नारायण गुरु फरवरी 1928 में अचानक अस्वस्थ हो गए, इनको अपने अंतिम समय का आभास हो गया था और 20 सितंबर 1928 को 72 वर्ष कि आयु में वे महासमाधि में लीन हो गए!

जनसंवाद को 19 दिन पूरे, कार्यक्रम का उद्देश्य तसल्ली से बातचीत कर लोगों की समस्याएं जानना : मनोहर

गरीब को अधिकार दिलाना ही हमारा उद्देश्य : मनोहर लाल

समस्या आप लाओ, समाधान मनोहर लाल करेगा

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल द्वारा जनसाधारण की समस्याएं जमीनी स्तर पर लोगों से सीधा सुनने के लिये आरम्भ किये गये जनसंवाद के तहत आज कुरुक्षेत्र के उमरी गांव में 19वां दिन आरम्भ हुआ। 90 दिन तक यह कार्यक्रम चलना निश्चित है। आज कुरुक्षेत्र जिला के ऐतिहासिक गांव उमरी में जनसंवाद के लिए पहुंचने पर मुख्यमंत्री ने सर्वप्रथम गांव के प्राचीन शिव मंदिर में पूजा-अर्चना की। यहां पहुंचने पर गांव की सरपंच मीना कुमारी ने मुख्यमंत्री को पुष्पगुच्छ व नम्बरदार बाबू राम ने सम्मान का प्रतीक पगड़ी पहनाकर उनका भव्य स्वागत किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने रेड क्रॉस द्वारा उपलब्ध करवाई गई व्हीलचेयर व श्रवण यंत्र चार व्यक्तियों को वितरित किए।

जन संवाद के दौरान उमरी चौक पर लम्बे रूट की बसों के ठहराव के बारे रखी गई मांग पर मुख्यमंत्री ने महाप्रबंधक हरियाणा रोडवेज को निर्देश दिये कि उमरी चौक पर एक विशेष रजिस्टर रखा जाए, जिसमें दैनिक यात्री अपनी यात्रा का ब्यौरा दर्ज करें और उसी के अनुसार लम्बे रूट की बसों के ठहराव की व्यवस्था की जाएगी।

सरकार ने भ्रष्टाचार पर कसा शिकंजा

मुख्यमंत्री जनसंवाद कार्यक्रम में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि गरीब को हक दिलाना उनकी पहली प्राथमिकता है। सरकार ने भ्रष्टाचार पर काफी हद तक शिकंजा कसा है, किसी भी सूरत में गलत काम नहीं होने दिया जाएगा, बिचौलियों की भूमिका को हमने खत्म किया है। उन्होंने कहा कि पहले अध्यापक अपना स्थानांतरण करवाने के लिये नेताओं को ढूंढते थे, परन्तु आज ऐसा नहीं है। हमारी सरकार ने ऑनलाइन ट्रांसफर नीति बनाई, जिसके माध्यम से ही आज अध्यापकों को उनके पसंदीदा स्टेशन मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि आम लोगों के जीवन को सुगम बनाने के लिए सरकार ने ऑनलाइन व्यवस्था आरम्भ की। सीएम विंडो में 13 लाख से अधिक फरियाद सरकार के पास सीधे पहुंची है, जिनका तुरंत समाधान हुआ है।

सीईटी पर लोगों को किया जा रहा है गुमराह

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी नौकरी के लिये हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आरम्भ की गई संयुक्त पात्रता परीक्षा के बारे में कुछ नेताओं द्वारा लोगों को गुमराह किया जा रहा है। ये आयोग का कार्य है कि किस एजेंसी से वे पेपर सेट करवाते हैं। पेपर में प्रश्न तय करना पेपर सेट करने वाली एजेंसी का कार्य है, न कि सरकार का। उन्होंने कहा कि अब तक 1.10 लाख लोगों को सरकारी नौकरियां दी जा चुकी हैं और अगले तीन मास में 30 हजार ग्रुप सी की भर्तियां की जाएंगी।

परिवार पहचान पत्र एक अहम दस्तावेज

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने उपस्थित लोगों को परिवार पहचान पत्र की महत्वता के बारे जानकारी देते हुए कहा कि अब हर योजना का लाभ परिवार पहचान पत्र के माध्यम से मिलता है। यहां तक की गांव की आबादी के अनुसार प्रति व्यक्ति 2000 रुपये की ग्रांट गांव के विकास कार्यों के लिये दी जाती है तथा आबादी के हिसाब से उमरी गांव में प्रत्येक वर्ष 1.82 करोड़ रुपये की ग्रांट मिलेगी तथा केन्द्र सरकार की ग्रांट इससे अलग है।

समस्या आप लाओ, समाधान मनोहर लाल करेगा

मुख्यमंत्री ने कहा कि आम जनमानस के जीवन को परेशानी मुक्त करना सरकार की प्राथमिकता है और इसलिए राज्य सरकार ने बड़े पैमाने पर आईटी का उपयोग करते हुए व्यवस्था परिवर्तन के काम किए हैं। समस्याओं को सुलझाकर लोगों को योजनाओं का लाभ प्रदान करना हमारी जिम्मेवारी है। वृद्धावस्था सम्मान भत्ता योजना के मामले में तो दो-दो घंटे में ही लोगों का नाम लाभार्थी की सूची में शामिल हुआ है। उन्होंने लोगों से आह्वान करते हुए कहा कि समस्याएं आप लाओ, हल मनोहर लाल करेगा।

पुलिस भर्ती की लम्बित ज्वाइनिंग की उच्च न्यायालय ने दी मंजूरी

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा पुलिस में लगभग 6600 पदों पर पुरुष व महिला सिपाहियों की भर्ती की गई थी, जिसमें से अधिकांश को जॉइनिंग दे दी गई थी, परन्तु 2000 पुरुष व एक हजार महिला सिपाहियों की ज्वाइनिंग का मामला न्यायालय में पहुंच गया था, गत दिवस न्यायालय ने इन्हें जॉइनिंग करवाने की अनुमति प्रदान कर दी है और शीघ्र ही इनको ज्वाइनिंग करवा दी जाएगी।

जनसंवाद उमरी व आस-पास के गांवों के लिये लाया सौगात

उमरी गांव में आयोजित जनसंवाद में मुख्यमंत्री ने गांव उमरी में 2 एकड़ में बनाए जाने वाले सामुदायिक भवन, सरकारी स्कूल के जर्जर भवन का नवीनीकरण करने, व्यायामशाला के लिए बजट मंजूर करने, गांव की ढाई एकड़ फिरनी को पक्का करने, प्रजापत धर्मशाला के साथ-साथ अन्य कुछ धर्मशालाओं को पक्का करने की घोषणा की। उन्होंने गांव उमरी के तालाब की खुदाई करवाने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने सरपंच व अन्य आसपास के गांवों से आए सरपंचों से मांग पत्र प्राप्त किये।

साम्प्रदायिक हिंसा की निष्पक्ष जांच व दोषियों पर हो सख्त कारवाई : आनंद

शान्ती बहाली के लिये नागरिक अधिकार मंच ने राज्यपाल को भेजा ज्ञापन

गजब हरियाणा न्यूज/ब्यूरो

कैथल । नागरिक अधिकार मंच जिला कैथल की ओर से लघु सचिवालय में सद्भावना मार्च का आयोजन किया गया। जिसका नेतृत्व मंच के जिला संयोजक सतपाल आनंद व सह संयोजक रमेश हरित ने किया। मार्च में सैंकडों लोगों ने भाग लिया। इस दौरान लोगों को शिवचरण, अमृत लाल, सतपाल आनंद, रमेश हरित, जय प्रकाश, प्रेम चंद आदि ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने अपने सम्बोधन मे कहा कि मणिपुर में जारी जातीय हिंसा व महिलाओं के साथ बद्दतरीन सलूक ने पूरे देश को दुनियां भर में शर्मसार किया है। अब हरियाणा के नूंह में 31जुलाई को हुई साम्प्रदायिक हिंसा व बाद में आसपास के इलाकों में भी साम्प्रदायिक हिंसा की वारदातें हुई हैं। कट्टरपंथी ताकतों द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को डराया व धमकाया जा रहा है। ऐसे माहौल में अल्पसंख्यकों के बीच भय का वातावरण बना हुआ है। इस हिंसा में दो होमगार्ड सहित सात लोग मारे गए हैं और करोडों की संपति का नुक्सान हुआ है। यह शासन- प्रशासन की विफलता के कारण हुआ है। घटना के बाद बिना किसी कानूनी प्रक्रिया के प्रशासन द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के सैंकडों घरों व दुकानों को तोड़ दिया है। ऐसा करके सरकार ने लोगों के रोजी रोटी के आसरे को छीन लिया है वहीं सैंकडों परिवारों को बेघर कर दिया है। इस कारवाई से छोटे छोटे बच्चों ,बजुर्गों, बीमार व्यक्तियों व महिलाओं को इतनी भयंकर गर्मी में बिना छत के रहने पर मजबूर कर दिया है। जिस पर माननीय उच्च न्यायलय ने संज्ञान लेते हुए ऐसी तोड़ फोड़ करने की कारवाई पर रोक लगाई है और सरकार पर सख्त टिपणी की है।

इस साम्प्रदायिक हिंसा व तोड़ -फोड़ की नागरिक अधिकार मंच कड़े शब्दों में निंदा करता है। उन्होने यह भी कहा नागरिक अधिकार मन्च लोगों में भाईचारा को मजबूत करने का काम करेगा। शान्ती मार्च के बाद उपायुक्त कैथल के माध्यम से राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया। ज्ञापन में छह मांगों को रखा गया। मांगों में

प्रदेश में रह रहे अल्पसंख्यकों के जान- माल की सुरक्षा सुनिश्चित करने, नूंह व आस-पास के इलाकों में हुई हिंसा की घटनाओं की उच्च न्यायालय के जज से निष्पक्ष जांच करवाने तथा दोषियों को कठोर सजा देने, घटनाओं में जिन लोगो का जान-माल का नुक्सान हुआ है उन सभी पीड़ितों को उचित मुआवजा देने, साम्प्रदायिक संगठनों द्वारा किये जाने वाले प्रदर्शनों व लामबन्दीयों में नफरती भाषण व भड़काऊ नारे देने वाले तत्वों पर सख्ती से रोक लगाने, कैथल जिले सहित प्रदेश के सभी जिलों में शान्ती कमेटियों का गठन करने व कमेटियों में अमन -पसंद सामाजिक संगठनों के लोगों को शामिल करने, सार्वजनिक शिक्षा की मजबूती के लिये संघर्ष करने वाले जन शिक्षा अधिकार मंच के कार्यकर्ता अध्यापक सुरेश द्रविड़ पर बनाए गए राजद्रोह के मुकदमें को वापिस लेने की मांगे प्रमुख थी।

कॉलेज ने एससी छात्रों की फीस यूनिवर्सिटी में जमा नहीं की

यूनिवर्सिटी ने रजिस्ट्रेशन नम्बर व रिजल्ट जारी नही किया

गजब हरियाणा न्यूज/ब्यूरो

पुंडरी, 4 अगस्त को डीएवी कॉलेज पुंडरी के छात्रों कि समस्याओं को लेकर बसवा चेयरमैन विक्रम थाना, सुरेश टांक, नरेश मुनारहेडी व असवा के पदाधिकारियों ने कुरुक्षेत्र विश्वविधालय के उपकुलपति से मुलाकात की। उन्होंने बताया की मामला यह है की अनुसूचित जाति के चारों का डीएवी कॉलेज पुंडरी में जीरो फीस पर छात्रवृत्ति के आधार पर हुआ था। परन्तु डीएवी कॉलेज पुंडरी ने अनुसूचित जाति के बच्चों की रजिस्ट्रेशन फीस कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में जमा नहीं करवाई। जिसके कारण अनुसूचित जाति के बच्चों का विश्वविद्यालय ने रजिस्ट्रेशन नम्बर व रिजल्ट जारी नहीं किया। जोकी छात्र-छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। उन्होंने बताया की कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी प्रशासन ने दी जानकारी में बताया की कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अधीन 287 कॉलेज आते हैं 286 कॉलेजों ने जीरो फीस के आधार पर दाखिला लेने वाले बच्चों की विश्वविद्यालय फीस जमा करवा दी गई हैं। परन्तु डीएवी कॉलेज पुंडरी ने विश्वविद्यालय में फीस जमा नहीं करवाई जोकी कॉलेज की जिम्मेदारी बनती है। जिसके कारण बच्चों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। बसवा टीम के संस्थापक रोहताश मेहरा ने हरियाणा अनुसूचित जाति आयोग चेयरमैन डॉ रविन्द्र बलियाला को लैटर लिखा है व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को भी ट्विट किया है ।ताकी बच्चों का एक साल बच सके और अगली कक्षा में दाखिला हो सके। इस मौके पर डीएवी कॉलेज पुंडरी के छात्र-छात्राऐं भी मौजूद रही।

डी.ए.वी पुलिस पब्लिक स्कूल के छात्रों ने नेशनल हेरिटेज क्वीज मे लिया भाग

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर । विद्यालय के प्रधानाचार्य अनूप कुमार चोपड़ा ने बताया कि इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चरल हेरिटेज द्वारा समय-समय पर सेमिनार व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिससे की भारत की विरास्त, संस्कृति एवं प्राचीन कला को ठीक से समझने का मौका देश की भावी पीढ़ी को मिले और वे इस प्राचीन धरोहर के संरक्षण में सहयोग कर सके। इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य भारत की विशाल प्राकृतिक, निर्मित और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और संरक्षण करना है। इस ट्रस्ट द्वारा आयोजित क्वीज में डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल के छात्रों ने भाग लिया तथा देश की विरासत के बारे में अपना ज्ञानवर्धन किया। यमुनानगर के विद्यालय में आयोजित इस प्रतियोगिता मे लगभग आठ विद्यालयों ने भाग लिया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य अनूप कुमार चोपड़ा ने बताया कि डी.ए.वी पुलिस पब्लिक स्कूल की आठवीं कक्षा से गर्विता, दीपिका, पूर्वा और मेटिस कक्षा नौवी की कशिश, प्रभनूर, अनामिका और दिव्यांका कक्षा दसवीं की प्राची, अनुशा, रितिका और वंशिका ने प्रतियोगिता में भाग लिया। भाग लेने वाले सभी छात्रों को ट्रस्ट द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए । विद्यालय की अध्यापिका राजविंदर कौर के नेतृत्व मे बच्चों ने प्रतियोगिता की तैयारी की।

अनूप कुमार चोपड़ा ने सभी छात्रों एवं अध्यापिका राजविंदर कौर की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अपने देश की प्राचीन संस्कृति, धरोहर एवं सभ्यता के प्रति छात्रों की रुचि होना गर्व की बात है। देश की भावी पीढ़ी यदि इस दिशा में प्रयासरत होगी तभी हमारी संस्कृति का संरक्षण संभव है।

51 दिनों के बिहार के मुख्यमंत्री बने थे बी.पी मंडल

मूक क्रांति के नायक बी.पी. मंडल का जीवन और समाज में योगदान(25 अगस्त जन्मदिन विशेष)

जब बी.पी. मंडल बिहार के सीएम बने तब बरौनी रिफाइनरी में रिसाव के कारण गंगा में आग लग गई थी। विधानसभा में विनोदानंद झा ने कटाक्ष करते हुए कहा था कि 'शूद्र मुख्यमंत्री होगा तो पानी में आग लगेगा ही।' इसके जवाब में मंडल ने कहा था कि 'गंगा में आग तो तेल के रिसाव से लगी है परंतु एक पिछडे वर्ग के बेटे के मुख्यमंत्री बनने से आपके दिल में जो आग लगी है, उसे हर कोई महसूस कर सकता है'

बी. पी. मंडल (25 अगस्त, 1918 – 13 अप्रैल, 1982)

बी.पी. मंडल के नाम से प्रसिद्ध बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल स्वतंत्र भारत के उन चुनिंदा राजनेताओं में शुमार हैं, जिनके कार्यों ने विशाल आबादी के जीवन में उत्साह का संचार किया, उन्हें राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा से जोड़ा तथा उनके अदृश्य पथप्रदर्शक की भूमिका का निर्वहन आज भी कर रहे हैं। वे सामाजिक न्याय के स्वप्नद्रष्टा तथा पिछड़ा वर्ग के मसीहा रहे। उनके अंदर बहुसंख्यकों के शोषण और उपेक्षा के खिलाफ आक्रोश की चिंगारी थी। मंडल कमीशन की रिपोर्ट उसी चिंगारी का प्रस्फुटन था, जो पिछडे वर्ग के जीवन में उजाले के रूप में स्थापित हो गया।

शेष बची बेंचों पर वंचित समाज के बच्चों को बैठने की जगह मिलती थी। कभी-कभी तो वंचित समाज के बच्चों को फर्श पर बैठने के लिए मजबूर किया जाता था। छात्रावास में भी वंचित समाज के बच्चे भेदभाव के शिकार होते थे। वहां सवर्ण समाज के बच्चों को भोजन खिलाने के बाद ही तथाकथित शूद्र जाति के छात्रों को भोजन देने का रिवाज था। सब कुछ सहजता से चल रहा था, किसी को इस व्यवस्था में कोई बुराई नजर नहीं आ रही थी। परंतु एक बालक ऐसा भी था जिसे यह सब नागवार गुजर रहा था। बालक बिंदेश्वरी ने जात-पात पर आधारित विभेदकारी व्यवस्था से व्यथित होकर आंदोलन छेड़ने का निर्णय किया। हालांकि वंचित समाज के बच्चे कम संख्या में थे फिर भी उनकी बात सुनी गई तथा विद्यालय में भेदभाव वाली व्यवस्था का अंत हुआ। समाजिक न्याय के सफर में यह घटना उनके लिए मील का पत्थर साबित हुई तथा उसने उनके चिंतन की दिशा बदल दी।

शब्दकोश में हैं, तो क्या हम सदन में गालियों का भी प्रयोग करेंगे!

सभी निरूत्तर हो गये तथा सदन के भीतर जातिसूचक शब्दों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

कांग्रेस से मोहभंग

सन् 1957 में हुए विधानसभा चुनाव में हार जाने के कारण उन्हें कैबिनेट मंत्री बनाये जाने का तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह के आश्वासन का लाभ नहीं मिल पाया। सन् 1962 के विधानसभा चुनाव में वे दोबारा चुनकर आए तब तक श्रीकृष्ण सिंह की मृत्यु हो चुकी थी तथा कांग्रेस के अंदरूनी सत्ता संघर्ष में शह-मात का खेल चल रहा था। बी.पी. मंडल जनता की समस्याओं को प्रखरता से सदन के पटल पर रख रहे थे। उन्हीं दिनों पामा गांव में दलितों पर सवर्णों के अत्याचार और पुलिसिया दमन के विरोध में सरकार से अलग स्टैंड लेने के कारण कांग्रेस नेतृत्व से उनके मतभेद हो गए. फलस्वरूप सन् 1965 में वे कांग्रेस से बाहर आ गए तथा संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (संसोपा) की सदस्यता ले ली। संसोपा उन दिनों डॉ. राममनोहर लोहिया के नेतृत्व में पिछडे वर्ग को

संगठित कर पूरे देश में गैर-कांग्रेसवाद का अभियान चला रही थी। संसोपा का नारा था, 'संसोपा ने बांधी गांठ, पिछड़ा पावे सौ में साठ'। बी.पी. मंडल के आने के बाद संसोपा को बिहार में नई उम्मीदों का बड़ा आधार मिल गया था।

वर्ग आयोग की असफलता की छाया से बाहर निकलने की बडी चुनौती थी। प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग ने आंकड़ों के इकट्ठा करने और उसके निष्कर्ष निकालने में भयंकर भूलें की थी, जिसका खामियाजा पिछड़ा वर्ग के होनहारों को लंबे समय तक उठाना पड़ा था। अध्यक्ष होने के नाते बी.पी. मंडल के समक्ष उन चुनौतियों को पारकर ऐसा फुलप्रूफ रिपोर्ट तैयार करना था जिसे संसदीय बहसों और अदालती कारवाईयों में खारिज नहीं किया जा सके।

आयोग के समक्ष संविधान की अनुच्छेद 15(4),16(4) तथा 340 के अधीन निम्नलिखित कार्य सौंपे गए थे

1.सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग की परिभाषा और पहचान के लिए कसौटी तय करना।

2.पहचाने गए समूह के विकास के लिए कारगर उपाय सुझाना।

3.केंद्र और राज्य की नौकरियों में समुचित प्रतिनिधित्व से वंचित पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण की आवश्यकता की जांच करना।

4.आयोग द्वारा खोजे गए तथ्यों को उचित संस्तुतियों के साथ भारत के राष्ट्रपति को एक प्रतिवेदन सौंपना।

मंडल आयोग के समक्ष पहली चुनौती सामाजिक और शैक्षणिक पिछड़े वर्ग की पहचान के लिए मानक निर्धारण करना तथा दूसरी बड़ी चुनौती पूरे देश का भ्रमण कर आंकड़ों को इकट्ठा करना था। आयोग ने देश के 406 जिलों में से 405 जिलों का दौरा किया, सर्वेक्षण किए, तथा समाज विज्ञानियों और विशेषज्ञों से मुलाकातें की, लोगों से सुझाव मांगे। इन आंकड़ों और सुझावों का अध्ययन करना और उसे उपयोग में लाना अत्यंत दुरूह कार्य था, जिसे आयोग ने सफलता पूर्वक अंजाम दिया। इतनी मुश्किलों से भरे कार्य को कम समय में अंजाम देना बी.पी. मंडल जैसे जुझारू सामाजिक योद्धा के ही वश की बात थी। मंडल आयोग ने 12 दिसम्बर, 1980 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के समापन भाषण के साथ अपना कार्य पूर्ण किया तथा 31 दिसम्बर, 1980 को आयोग की रिपोर्ट प्रतिवेदन के साथ राष्ट्रपति को सौंप दिया।

मंडल आयोग ने सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग के लिए जो सिफारिशें की उनमें से प्रमुख हैं

1.केन्द्र और राज्य सरकारों की सेवाओं में पिछड़ा वर्ग के 27त्न सीटें आरक्षित की जाए।

2.जमींदारी प्रथा को खत्म करने के लिए भूमि सुधार कानून लागू किया जाए क्योंकि ज्यादा पिछड़े गरीब हैं। पिछडे वर्गों का सबसे बडा दुश्मन जमींदारी प्रथा थी।

3.सरकार द्वारा अनुबंधित जमीन को न केवल एससी व एसटी को दिया जाए बल्कि ओबीसी को भी इसमें शामिल किया जाए।

4.केंद्र और राज्य सरकारों में ओबीसी के हितों की सुरक्षा के लिए अलग मंत्रालय/विभाग बनाए जायें।

5.केंद्र और राज्य सरकारों के अधीन चलने वाली वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रोफेशनल तथा उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिले के लिए ओबीसी वर्गों के छात्र-छात्राओं के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण लागू किया जाए।

6.पिछडे वर्ग की आबादी वाले क्षेत्रों में वयस्क शिक्षा केंद्र तथा पिछड़े वर्गों के छात्र-छात्राओं के लिए आवासीय विद्यालय खोले जाएं। पिछड़ा वर्ग के छात्रों को रोजगार परक शिक्षा दी जाए।

नये युग की शुरूआत

पिछडे वर्ग के लोगों के लिए मंडल कमीशन की रिपोर्ट युगांतकारी घटना साबित हुई है। हालांकि इस रिपोर्ट को एक दशक तक दबाकर रखा गया। फिर वह दिन भी आ ही गया जब विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाली केंद्र की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने 13 अगस्त 1990 को मंडल कमीशन के सबसे महत्वपूर्ण सिफारिशों में से एक को लागू करने की अधिसूचना जारी कर दी। अब पिछड़ा वर्ग के लिए सरकारी सेवा में जाने के लिए बंद दरवाजे खुल चुके थे। विरोध प्रदर्शनों और थोड़ी अड़ंगेबाजी के बाद सुप्रीम कोर्ट की मुहर लगकर 8 सितम्बर, 1993 को फाइनल अधिसूचना भी जारी कर दी गई।

मंडल आयोग की दूसरी महत्वपूर्ण सिफारिश के अनुसार केंद्रीय शिक्षण, तकनीकी एवं व्यावसायिक संस्थानों में पिछड़ा वर्ग के लिए प्रवेश के द्वार भी आखिरकार 20 अगस्त, 2008 को खोल दिए गए।

मंडल आयोग की सिफारिशों पर प्रकाश डालते हुए बी.पी. मंडल ने कहा था- 'सामाजिक पिछडेपन को दूर करने की जंग को पिछड़ी जातियों के जेहन में जीतना जरूरी है। भारत में सरकारी नौकरी पाना सम्मान की बात है। ओबीसी वर्ग की नौकरियों में भागीदारी बढ़ने से उन्हें यकीन होगा कि वे सरकार में भागीदार हैं। पिछड़ी जाति का व्यक्ति अगर कलेक्टर या पुलिस अधीक्षक बनता है तो जाहिर तौर पर उसके परिवार के अलावा किसी और को लाभ नहीं होगा पर वह जिस समाज से आता है, उन लोगों में गर्व की भावना आएगी, उनका सिर ऊंचा होगा कि उन्हीं में से कोई व्यक्ति 'सत्ता के गलियारों' में है।' मंडल कमीशन ने पिछड़े वर्ग के लोगों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव की पृष्ठभूमि तैयार की है। उनमें राजनीतिक और शैक्षणिक चेतना का असीम संचार हुआ है। बी.पी. मंडल की एक सिफारिश ने तो सबको चौंका ही दिया था। जमींदार परिवार से रहते हुए भी वंचित वर्गों के पक्ष में जमींदारी उन्मूलन की सिफारिश करना उनके पिछड़ा वर्गों के प्रति अगाध लगाव तथा उनके हृदय की विशालता को प्रदर्शित करता है।

मूक क्रांति के नायक के रूप में मशहूर बी.पी. मंडल का 13 अप्रैल, 1982 को हृदय गति रुक जाने से पटना में निधन हो गया। वे जीते जी अपने सिफारिशों को लागू होते हुए नहीं देख पाए, परंतु जब भी पिछड़ा वर्ग के उन्नायकों की फ़ेहरिस्त बनेगी, उनका नाम हमेशा आगे रखा जायेगा।

सोशल मीडिया साभार

शिक्षा मंत्री ने शिकायतों के निवारण के दिए सख्त निर्देश

लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ होगी कड़ी कार्रवाई : कंवरपाल

गजब हरियाणा न्यूज/सुखबीर

यमुनानगर । हरियाणा के स्कूल शिक्षा मंत्री ने नगर निगम, बिजली बोर्ड और पब्लिक हेल्थ के सभी अधिकारियों के साथ सरस्वती कॉलोनी, भागीरथ कॉलोनी, मधुबन कॉलोनी और कल्याण नगर में कालोनियों में सफाई व्यवस्था, सीवरेज,स्ट्रीट लाइट,बिजली और कई मामलों की मिल रही शिकायतों के निवारण के लिए सम्बंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए । उन्होंने अधिकारियों के साथ सभी पॉइंट्स को देखा और अधिकारियों को मौके पर ही जल्द सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के कड़े निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जल्द ही अगर व्यवस्थाएं दुरुस्त न हुई और जनता को कोई परेशानी होती है तो ऐसे लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरे के बाद उन्होंने नगर निगम और पब्लिक हेल्थ के अधिकारियों के साथ एक बैठक की और इन तमाम मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की।

शिक्षा मंत्री कंवरपाल ने कुछ जगह सीवरेज बंद होने, सीवरेज का पानी ओवरफ्लो होने की वजह से लोगों को परेशानी होती है इसको लेकर भी अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जल्द से जल्द व्यवस्थाएं दुरुस्त कर दी जाए। उन्होंने कहा कि कुछ जगह पर कई कॉलोनी में सडक बनी है लेकिन वहां पानी के पाइप डालने की वजह से गलियों की हालत खराब हो गई है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए गए है कि जल्द वहां रिपेयर करवाए। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार प्रकाश चौक से लेकर गौरी शंकर मंदिर तक सडक मंजूर हो चुकी है वहां पर भी काम शुरू होने वाला है इसके लिए हम चाहते हैं कि वहां की सडकें और चौड़ी हो और लोगों को सुविधा हो। इसके लिए जो वहां पर बिजली के खंभे लगे हैं उन्हें सडक के एक तरफ लगाने के लिए बिजली बोर्ड के सुपरिटेंडेंट इंजीनियर और अधिकारियों को मौके पर बुलाया गया था और उनसे बात की गई है कि जल्द से जल्द एस्टीमेट बनाकर काम शुरू कर दिया जाए ताकि बिजली के खंभे एक तरफ लग जाए इससे सडक की सुंदरता भी बढ़ेगी और लोगों को भी आने जाने में सुविधा होगी।

उन्होंने कहा कि इन सभी मुद्दों को लेकर नगर निगम के और पब्लिक हेल्थ के अधिकारियों के साथ एक बैठक की गई है इस बैठक में अनअफ्रूव्ड कालोनियों का मुद्दा, सीवरेज ब्लॉकेज का मुद्दा स्ट्रीट लाइट का मुद्दा और जो अधूरे कार्य पड़े हैं उन सभी मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। सभी अधिकारियों ने जल्द ही इन सभी कामों को पूरा करने का आश्वासन दिया है । उन्होंने कहा कि इन सब कामों के लिए अधिकारियों की जवाबदेही भी तय की गई है और जितनी भी व्यवस्थाएं दुरुस्त नहीं है और अगले दौरे पर अगर फिर से वही हालात मिले तो ऐसे अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जल्द ही इसी प्रकार से सब जगह दौरा किया जाएगा और जो भी छोटी-छोटी समस्याएं हैं उन्हें जल्द से जल्द दूर किया जाएगा।

उन्होंने बैठक में विस्तार से अधिकारियों के साथ चर्चा की। इस बैठक में परिवार पहचान पत्र में

इनकम वेरिफिकेशन को लेकर जो लोगों को समस्या आ रही है,परिवार पहचान पत्र और प्रॉपर्टी आईडी को लेकर जो लोगों को परेशानी हो रही है,सीवरेज साफ करवाने पर जमा हुए कूड़े को उठाने के लिए पब्लिक हेल्थ और नगर निगम के अधिकारियों के बीच जो विवाद हैं,वार्डों में स्ट्रीट लाइट, न्यूली अफ्रूव्ड कॉलोनी में जल्द से जल्द सीवरेज और पानी की लाइन बिछाई जाए इन मुद्दो पर चर्चा की गई। उन्होंने अग्रसेन चौक से रक्षक विहार नाके तक मेन रोड की साइड में टाइल लगने को लेकर हुए वर्क आर्डर होने के बाद भी काम में हुई देरी पर अधिकारियों से जवाबदेही तय की गई। बैठक में बिजली के खंभे जो सडक के बीच में है उन्हें साइड में शिफ्ट किया जाए काली मंदिर चौक प्रकाश चौक से लेकर गौरी शंकर मंदिर इस मुद्दे पर बिजली विभाग के अधिकारियों से चर्चा की गई। कल्याण नगर इंदिरा कॉलोनी स्कूल रोड रेलवे बाजार झंडा चौक सभी लोहे के खंभे शिफ्ट करने,लोहारन मोहल्ला, हानियाँन गली, धर्म पुरा,कल्याण नगर, श्रीनगर कॉलोनी इंदिरा कॉलोनी इन जगह बिजली की तारे लटक गई है इसके लिए अधिकारियों को बिजली विभाग के अधिकारी को दिशा निर्देश दिए गए।

इस अवसर पर नगर निगम के एक्सईएन विकास धीमान, पब्लिक हेल्थ के एक्सईन सौरब अहलावत,बिजली विभाग के एसईएमई वरुण शर्मा ,चीफ सेनेटरी इंस्पेक्टर हरजीत सिंह,सेनेटरी इंस्पेक्टर प्रदीप चौधरी, जेई ललित,जेई गगन संधू ,जेई पंकज,जेई प्रतीक,निश्चल चौधरी भाजपा युवा मोर्चा उपाध्यक्ष,विपुल गर्ग मंडल अध्यक्ष, प्रियांक शर्मा महामंत्री ,राहुल गढ़ी,रविन्द्र मल्होत्रा,हंसराज,रामपाल सैनी मौजूद रहे।

अमृतवाणी

संत शिरोमणि गुरु रविदास जिओ की
जय गुरुदेव जी

जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल
बासु जानीऐ जगि सोइ ॥1 ॥रहाउ ॥

व्याख्या : श्री गुरू रविदास महाराज जी पवित्र अमृतवाणी में फरमान करते हुए कहते हैं कि जिस कुल में प्रभु का सिमरन करने वाला संत महापुरुष पैदा होता है चाहे वह वर्णों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और चाहे वर्णों से बाहर हो वह कंगाल नहीं है बल्कि वह प्रभु का स्वरूप है और उसकी पवित्र वासना पूरे संसार में जानी जाती हैं।

धन गुरुदेव जी

साईं बुल्ले शाह काफ़ी -2

आओ फकीरो मेले चलिए

आओ फकीरो मेले चलिए, आरफ दा सुन वाजा रे ।
अनहद सबद सुनो बहु रंगी, तजीए भेख प्याजा रे ।
अनहद बाजा सरब मिलापी, निरवैरी सिरनाजा रे ।
मेले बाझों मेला औतर, रुढ़ ग्या मूल व्याजा रे ।
कठिन फकीरी रसता आशक, कायम करो मन बाजा रे ।
बन्दा रब्ब ब्रिहों इक मगर सुख, बुल्हा पड़ जहान बराजा रे ।

मुल्ला नसरुदीन किस्से

मुल्ला और पड़ोसी

एक पड़ोसी मुल्ला नसरुद्दीन के द्वार पर पहुंचा . मुल्ला उससे मिलने बाहर निकले।

'मुल्ला क्या तुम आज के लिए अपना गधा मुझे दे सकते हो , मुझे कुछ सामान दूसरे शहर पहुंचाना है ?'

मुल्ला उसे अपना गधा नहीं देना चाहते थे , पर साफ़ -साफ़ मन करने से पड़ोसी को ठेस पहुँचती इसलिए उन्होंने झूठ कह दिया , ' मुझे माफ़ करना मैंने तो आज सुबह ही अपना गधा किसी उर को दे दिया है।'

मुल्ला ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि अन्दर से ढेंचू-ढेंचू की आवाज़ आने लगी।

' लेकिन मुल्ला , गधा तो अन्दर बंधा चिल्ला

रहा है।', पड़ोसी ने चौकते हुए कहा।

'तुम किस पर यकीन करते हो।', मुल्ला बिना घबराए बोले ,

'गधे पर या अपने मुल्ला पर ?'

पडोसी चुप चाप वापस चला गया।

बुद्ध और अनुयाई

भगवान् बुद्ध का एक अनुयायी ने कहा , 'प्रभु ! मुझे आपसे एक निवेदन करना है।

बुद्ध: बताओ क्या कहना है ?

अनुयायी: मेरे वस्त्र पुराने हो चुके हैं। अब ये पहनने लायक नहीं रहे। कृपया मुझे नए वस्त्र देने का कष्ट करें ! बुद्ध ने अनुयायी के वस्त्र देखे, वे सचमुच बिलकुल जीर्ण हो चुके थे और जगह जगह से घिस चुके थे, इसलिए उन्होंने एक अन्य अनुयायी को नए वस्त्र देने का आदेश दे दिए।

कुछ दिनों बाद बुद्ध अनुयायी के घर पहुंचे।

बुद्ध : क्या तुम अपने नए वस्त्रों में आराम से हो ? तुम्हे और कुछ तो नहीं चाहिए ?

अनुयायी: धन्यवाद प्रभु। मैं इन वस्त्रों में बिलकुल आराम से हूँ और मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

बुद्ध: अब जबकि तुम्हारे पास नए वस्त्र हैं तो तुमने पुराने वस्त्रों का क्या किया ?

अनुयायी: मैं अब उसे ओढने के लिए प्रयोग कर रहा हूँ ? बुद्ध: तो तुमने अपनी पुरानी ओढ़नी का क्या किया ?

अनुयायी: जी मैंने उसे खिड़की पर परदे की जगह लगा दिया है।

बुद्ध: तो क्या तुमने पुराने परदे फेंक दिए ?

अनुयायी: जी नहीं , मैंने उसके चार टुकड़े किये और उनका प्रयोग रसोई में गरम पतीलों को आग से उतारने के लिए कर रहा हूँ।

बुद्ध: तो फिर रौइ के पुराने कपड़ों का क्या किया ?

अनुयायी: अब मैं उन्हें पोछा लगाने के लिए प्रयोग करूँगा।

बुद्ध: तो तुम्हारा पुराना पोछा क्या हुआ ?

अनुयायी: प्रभु वो अब इतना तार-तार हो चुका था कि उसका कुछ नहीं किया जा सकता था, इसलिए मैंने उसका एक-एक धागा अलग कर दिए की बत्तियां त्यार कर ली, उन्ही में से एक आपके कक्ष में कल प्रकाशित था।

बुद्ध अनुयायी से प्रसन्न हो गए वे प्रसन्न थे कि वे वस्तुओं को बर्बाद नहीं करता और उसमे समझ है की उनका प्रयोग किस तरह से किया जा सकता है।

फिर कुछ नहीं मांगता भक्त

फिर कुछ नहीं मांगता प्रेमी। तेरा सत दरसन चहौं बस एक तेरा दर्शन हो जाए। कछु और न मांगी। जब तक तुम कुछ और मांगते हो, जानना कि तुम्हारे जीवन का अभी धर्म से संस्पर्श नहीं हुआ। गए मंदिर में और कुछ मांगने लगे धन, पद, प्रतिष्ठा, तो तुमने परमात्मा का बहुत अपमान किया। परमात्मा के सामने और धन मांगा, तो अर्थ समझे ? अर्थ हुआ कि धन परमात्मा से बड़ा है। परमात्मा को साधन बना रहे हो, धन मांगने में ? पद मांगा, प्रतिष्ठा मांगी, बेटा मांगा, बेटी मांगी, नौकरी मांगी, यश मांगा, तुमने परमात्मा का बड़ा अपमान किया।

तुम्हारी प्रार्थनाएं परमात्मा के अपमान के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हैं। इसलिए तुम्हारी प्रार्थनाएं न तो सुनी जातीं, न कभी पूरी होतीं। तुम्हारी प्रार्थनाओं में पंख ही नहीं हैं। तुम्हारी प्रार्थनाएं यहीं तड़फड़ाकर जमीन पर गिरती हैं, कीड़े-मकोड़ों की तरह मर जाती हैं। आकाश में उड़ने की उनकी क्षमता नहीं है। आकाश में तो वे प्रार्थनाएं उड़ती हैं जिनमें सिर्फ एक ही मांग होती है, बस एक ही मांग होती है; परमात्मा की, और कुछ भी नहीं न पद, न धन, न प्रतिष्ठा। सब खो जाए पद भी, धन भी, प्रतिष्ठा भी, और एक परमात्मा से मिलन हो जाए। जिस दिन कोई सिर्फ परमात्मा को मांगता है, निपट परमात्मा को मांगता है, उसी क्षण प्रार्थना पूरी हो जाती है। और जिसने परमात्मा को पा लिया उसे सब अपने-आप मिल जाता है।

जीसस का प्रसिद्ध वचन है, 'सीक इ फर्स्ट द किंगडम आफ गाड एंड आल एल्स शैल बी एडिड अन टू यू।' पहले तुम प्रभु के राज्य को खोज लो और फिर शेष सब अपने से मिल जाएगा। मगर खयाल रखना, मन की चालबाजी से सावधान रहना। कहीं इसलिए परमात्मा को मत मांगना ताकि शेष सब मिल जाए; नहीं तो चूक गए। अगर शेष सब मिल जाए इसलिए परमात्मा को मांगा तो परमात्मा को फिर भी नहीं मांगा। फिर भी मन धोखा दे गया। फिर तुम आत्मवंचना में पड़ गए।

तेरा सत दरसन चहौं, कछु और न मांगी
निसबासर तेरे नाम की अंतर धुनि जागी

जब तुम्हारी श्वास-श्वास में, धड़कन-धड़कन में, रोएं-रोएं में एक ही रोमांच होता है, एक ही भाव सतत झरता है, तुम्हारे उठने-बैठने में बस एक ही हूक उठती है कि परमात्मा से कैसे मिलन हो ! नहीं कि शब्द ऐसे बनते हैं, नहीं कि तुम बार-बार कहते हो कि परमात्मा से कैसे मिलन हो ! कहने की जरूरत नहीं होती। जहां भाव है वहां शब्द व्यर्थ हैं, भाव काफी है। तुम भाव से भरे होते हो, लबालब होते हो। भाव बहता है। भाव तुम्हारे पोर-पोर में समाया होता है, रोएं-रोएं में झलकता होता है। तुम्हारी आंखों में उसकी लहरें होती हैं, तुम्हारे हाथों में उसकी तरंग होती है, तुम्हारी वाणी में, तुम्हारे मौन में, सबमें उसकी झलक होती है, उसका रंग होता है।

निसबासर तेरे नाम की अंतर धुनि जागी

और ऐसे राम-राम जपने से कुछ भी नहीं होता, कि घड़ी भर बैठ गए, माला हाथ में ले ली, राम-राम जप लिया। जब तक प्रभु-स्मरण, उसकी सुरति सोते-जागते तुम्हारा अंतर्भाव न बन जाए, अंतर्धारा न बन जाए तब तक कुछ भी न होगा। इससे कम से कुछ भी न होगा।

ओशो

मृत्युभोज का कारण

मृत्युभोज की बड़ी दावतें देने की प्रथा उस समय चली होगी जब बार-बार अकाल पड़ते थे और भूखे प्यासे लोग अधिक रहते थे, तब मृतात्मा की शांति के लिए भूखे प्यासों को भोजन कराके पुण्यप्राप्ति की बात सोची जाती होगी। पर आज जब यार दोस्तों को भूखे प्यासे अकाल पीड़ितों के स्थान पर दावत खिलाने बुलाया जाए तो इसमें खाने वाले और खिलाने वाले का क्या गौरव रह जाता है ? जिस घर में एक व्यक्ति को मरे पंद्रह दिन भी नहीं हुए हैं, वहां शोक सांत्वना देने के स्थान पर दोस्त लोग दावत उड़ाने और उस बेचारे के घर को खाली करने जा पहुंचें तो इसमें क्या भलमनसाहत की बात है ? एक व्यक्ति के मर जाने से परिवार की क्षति होना स्वाभाविक है। इस पर भी बड़े प्रीतिभोज का भार उस परिवार पर पड़े तो उसकी आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ेगी। सताए को और सताने वाली इस प्रथा से-'मरे को मारें शाह मदार' वाली कहावत ही चरितार्थ होती है। ऐसे रिवाजों को इसलिए जारी रखा जाए कि इसकी प्रथा चली आ रही है तो यह मानसिक दुर्बलता क्योंकर उचित कही जा सकती है ?

आप भला तो जग भला

जैसे आपका मन होता है संसार आपको वैसा ही नजर आता है, वैसे ही आप लोगों को देखने लगते हैं, उसी के अनुसार सोचने, विचारने और कर्म करने लगते हैं।

भगवान बुद्ध देशना में इसे एक लोकप्रिय कहानी से समझाते हैं- किसी गांव के पहाड़ पर दो गडरिये भेड़ बकरी चराया करते थे। एक दिन वहां से एक राहगीर ने गड़रियों से पूछा कि इस गांव के लोग कैसे हैं क्योंकि मुझे आज रात इसी गांव में ठहरना है।

एक गडरिये ने राहगीर से पूछा- पहले यह बताओ कि आपके गांव के लोग कैसे हैं ? राहगीर ने उत्तर दिया- हमारे गांव के लोग बहुत बेईमान, ईर्ष्यालु, चालाक, छल कपटी और दुष्ट है।

यह सुन गडरिये ने कहा- इस गांव के लोग भी वैसे ही दुष्ट, कपटी और ठगी है इसलिए सावधान रहना।

दूसरे दिन एक दूसरे राहगीर ने उधर से जाते हुए गडरियों से गांव के लोगों के बारे में वही सवाल किया। उस गडरिये ने भी राहगीर से वही सवाल किया कि आपके गांव के लोग कैसे हैं ? राहगीर ने बताया कि हमारे गांव के लोग मेहमान, बुजुर्गों का सम्मान करने वाले, परोपकारी, ईमानदार और बहुत भले लोग हैं।

उस पर गडरिये ने कहा कि इस गांव के लोग भी बहुत शांत, अतिथि सत्कार करने वाले, ईमानदार और भले लोग हैं।

राहगीर के चले जाने पर दूसरे गडरिये ने अपने साथी से कहा कि तुम कैसे यह झूठ और विरोधाभासी बातें करते हो ? कल ही तुमने पहले राहगीर से कहा था कि इस गांव के लोग दुष्ट, लालची और स्वार्थी हैं फिर आज प्रशंसा कर रहे हो कि इस गांव के लोग बहुत सहज, सरल, बड़ों का सम्मान करने वाले, मेहमान को देवता समझने वाले, भले लोग हैं। यह कैसा विरोधाभास है ?

उस पर साथी ने कहा- यह दोनों राहगीर एक ही गांव के होने पर भी, उनमें से एक अपने गांव के लोगों की तारीफ कर रहा था जबकि दूसरा गांव के लोगों को चालाक, दुष्ट बताकर निंदा कर रहा था। इसका यही कारण है कि यदि आप खुद ईमानदार सहज, सरल, निष्कपटी, भले हैं तो दूसरा भी वैसा ही लगने लगेगा। यदि आप खुद लोभी, स्वार्थी, चालाक और कपटी है तो दूसरा भी वैसा ही लगेगा।

इसलिए तथागत कहते हैं यह संसार मनोमय है। मन ही प्रधान है। सारा मन का खेल है। सब अपने चित्त, मन पर निर्भर करता है। मन ही सारे विचारों और कर्मो का मुखिया है।

मन को वश में कर हमें भलाई, अच्छाई की ओर चिंतन, मनन, विचार और कर्म करना चाहिए। यही सुख शांति का मार्ग है। यही सनातन सत्य है। यही धम्म है।

भवतु सब्बं मंगलं। सबका कल्याण हो। सभी प्राणी सुखी हो।

आलेख: डॉ. एम एल परिहार, जयपुर

20 अगस्त की करनाल रैली में बिजली विभाग के सैकड़ों कर्मचारी लेंगे भाग : सरोहा

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र। बिजली विभाग के कर्मचारियों की जेई रमन कुमार की अध्यक्षता में गुरू रविदास मन्दिर के प्रांगण में बैठक हुई। बैठक में 20 अगस्त को करनाल में होने वाली राज्यस्तरीय रैली को सफल बनाने के लिए विचार विमर्श किया गया। बैठक में फैसला लिया गया कि जिला कुरूक्षेत्र से सैकड़ों की संख्या में बिजली विभाग से कर्मचारी रैली में शामिल होंगे। हरियाणा अनुसूचित जाति राजकीय अध्यापक संघ के राज्य कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश सरोहा ने 20 अगस्त को करनाल में होने वाली राज्यस्तरीय शिक्षा बचाओ रोजगार बचाओ प्रतिनिधित्व पाओ रैली का बिजली कर्मचारियों को न्यौता देते हुए आह्वान किया कि वे ज्यादा से ज्यादा संख्या में रैली में पहुंचे। जिला सचिव रमेश थाना व रमन कुमार ने सयुंक्त ब्यान में कहा कि इस रैली मे कर्मचारी व सामाजिक संगठन विभिन्न मांगों को लेकर आन्दोलन कर रहा है जिसमे सीएम मनोहर लाल द्वारा 12 जून 2022 व 3 फरवरी 2023 में पदोन्नति में आरक्षण की घोषणा की थी, लेकिन उसे अभी तक पूरा नहीं किया गया। उन्होंने मांग की कि कौशल रोजगार निगम को बन्द करके सभी विभागों में नियमित भर्ती की जाए। हरियाण प्रदेश में बैकलॉग को स्पेशल भर्ती के द्वारा बैकलॉग के पदों को जल्द से जल्द भरा जाए। महाविद्यालय व विद्यालय में मिलने वाली छात्रवृत्ति व प्रोत्साहन राशि जो पिछले 7 वर्ष से समय पर नहीं मिल रही है उसे विद्यार्थियों के खाते में डाला जाए। चिराग योजना को बन्द करके विद्यालय के स्तर में सुधार किया जाए। अजय खेर व राजेश मुडें ने कहा कि पुरानी पैंशन को बहाल किया जाए। सभी प्राथमिक विद्यालय में बिना शर्त के मुख्य शिक्षक के पद बहाल किए जाएं।

गुरु रविदास मन्दिर एव धर्मशाला के प्रधान सुरजभान नरवाल ने कहा कि मन्दिर कमेटी की तरफ से इस रैली में सैकड़ों की तादाद में शामिल होंगे। इस अवसर पर रमेश बौद्ध , परमजीत सिंह, राजेन्द्र रामगढ, नरेश कुमार, सन्दीप कुमार, बन्टी, आनंद कुमार, हरफुल ढांडा, पवन कुमार, बाबू राम आदि उपस्थित रहे।

राजीव गांधी पंचायती राज संगठन में नियुक्त किए गए पदाधिकारियों का धुराला में किया गया स्वागत

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । राजीव गांधी पंचायती राज संगठन में अमरजीत सिंह अजरावर को जिलाध्यक्ष, तेजपाल चौपड़ा ठसका अला को जिला उपाध्यक्ष व ज्ञान सिंह धुराला को ब्लाक अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। राजीव पंचायत राज संगठन में नियुक्त हुए सभी पदाधिकारियों ने नियुक्ति के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी, सांसद राहुल गांधी, राष्ट्रीय कांग्रेस की महासचिव एवं छत्तीसगढ की प्रभारी कुमारी सैलजा, राजीव गांधी पंचायती संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद मीनाक्षी नटराजन, राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर सुनील पंवार, हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी की सदस्य बिमला सरोहा का आभार जताया है। उन्होंने कांग्रेस के तमाम शीर्ष नेताओं का आभार जताते हुए विश्वास दिलाया है कि उन्हें जो जिम्मेवारी सौंपी गई है, वे उसे पूरी ईमानदारी के साथ निभाने का काम करेंगे और अधिक से अधिक लोगों को कांग्रेस पार्टी के साथ जोडने का प्रयास करेंगे। उनका प्रयास रहेगा राजीव गांधी पंचायती राज संगठन को मजबूती दी जाए और संगठन से जुड़ी तमाम गतिविधियां जनता तक पहुंचाई जाएं। सभी नियुक्त पदाधिकारियों का धुराला में आयोजित कार्यक्रम में स्वागत किया गया।

इस मौके पर ब्लाक समिति सदस्य अर्जुन सिंह, गुरमीत सिंह, रण सिंह गुज्जर, हाक्म गुज्जर,पलविन्दर सिंह, प्रताप सिंह, कुलविन्दर सिंह, सुरजीत सिंह, प्रधुमन सिंह, चीमा,गुरविंदर सिंह, संजू गुज्जर, प्रीतपाल, जरनैल सिंह, राम कुमार सरोहा,गुरजीत सिंह, राहुल मेंबर पंचायत, दविन्दर सिंह चीमा, महिन्द्र सिंह, प्रकाश कुमार मौजूद रहे।

नई शिक्षा नीति को लेकर रविवार को अंबेडकर भवन में विचार गोष्ठी : डॉ. रामभगत लांगायन

गजब हरियाणा न्यूज/रविंद्र

पिपली । नई शिक्षा नीति को लेकर रविवार को सेक्टर 8 स्थित अंबेडकर भवन में एक गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। गोष्ठी में नई शिक्षा नीति को लेकर वक्ता अपने विचार रखेंगे। अंबेडकर भवन कमेटी के प्रधान डॉक्टर रामभगत लांग्यान ने बताया कि गोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर स्टेट इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज इन टीचर एजूकेशन कुरुक्षेत्र गुरुग्राम के डायरेक्टर ऋषि गोयल व चंडीगढ़ में हायर एजुकेशन के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. कुलदीप सिंह विशेष रूप से गोष्ठी में पहुंचेंगे और गोष्ठी में अपना संबोधन देंगे। उन्होंने बताया कि नई शिक्षा नीति को लेकर आयोजित की जा रही गोष्ठी में नई शिक्षा नीति पर सभी वक्ता अपने-अपने विचार रखेंगे और बताएंगे की नई शिक्षा नीति देश के विद्यार्थियों के लिए कितनी लाभकारी है और नई शिक्षा नीति से विद्यार्थियों को क्या लाभ होने वाला है। नई शिक्षा नीति का विद्यार्थियों की पढ़ाई पर क्या असर पडने वाला है इसे लेकर सभी वक्त अपने विचार रखेंगे।

उन्होंने बताया कि गोष्ठी में कई अन्य वक्ता भी अपने विचार रखेंगे। गोष्ठी को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।. मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों को गोष्ठी के लिए निमंत्रण भेज दिया गया है। दूसरे अतिथियों को भी गोष्ठी में विधिवत रूप विधिवत रूप से निमंत्रण दिया गया है। उन्होंने बताया कि अंबेडकर भवन में समय-समय पर अन्य विषयों पर गोष्ठी व कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । देश के महापुरुषों की जयंती और उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर भी अंबेडकर भवन में कार्यक्रम कर महापुरुषों को याद किया जाता है।

उन्होंने बताया कि इसके अलावा भी अंबेडकर भवन में अन्य तरह की गतिविधियां चलाई जाती हैं जिनसे जो शिक्षाप्रद होती हैं और जिससे विद्यार्थियों को काफी लाभ मिलता है।

कैथल के गांव कठवाड़ में चौथे ऑनलाइन क्लास रूम की स्थापना

हमारे समाज में साधनों की कमी के चलते शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ रहे बच्चे : डा. फुलिया

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कैथल । बदलाव सोशल सोसायटी हरियाणा ने 6 अगस्त को कैथल के गांव कठवाड़ में चौथे ऑनलाइन क्लास रूम की स्थापना की। इस दौरान मुख्य रूप से डॉ राजरूप फुलिया ने शिरकत कर संबोधित किया।

उन्होंने कहा कि हमारे समाज में साधनों की कमी के चलते बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ रहें हैं। इस समस्या को कैथल के कुछ शिक्षकों ने समझा और उसके निदान के लिए बदलाव सोशल सोसाइटी का गठन कर डॉ भीमराव अंबेडकर बहुआयामी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वातानुकूल लाइब्रेरी और डिजिटल क्लास रूम बनाया जिसमें बच्चों को एन.एम.एम.एस, बुनियाद और 10 वीं कक्षा के गणित का ऑनलाइन प्रसारण किया जा रहा है जबकि कुछ गावों के विद्यार्थी मोबाइल के नेटवर्क द्वारा इस कक्षा का फायदा नही मिल रहा था। जिसके लिए गावों में एलईडी को वाईफाई नेटवर्क उपलब्ध करवा कर डिजिटल क्लास रूम बनाए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा की इसी कड़ी में कठवाड़ के बच्चे इस ऑनलाइन कोचिंग के लिए अब एलईडी लगाई गई है।जिसका बच्चे पूरा फायदा उठाएंगे।

संस्थान के संचालक अनिल कुमार ने बताया कि सोसाइटी इससे पहले 3 ऑनलाइन क्लासरूम गांव दीवाल, कोटडा और उझाना में स्थापित कर चुका है। यह ऑनलाइन क्लास डॉ भीमराव अंबेडकर बहुआयामी प्रशिक्षण संस्थान के रूम कैथल में प्रसारित की जा रही है।जिसमे एन.एम.एम.एस व बुनियाद और 10वीं कक्षा के गणित विषय का प्रसारण ऑनलाइन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कठवाड़ के लगभग 15 बच्चे एन.एम.एम.एस और 16 बच्चे गणित के ऑनलाइन जुड़ेंगे। इस कार्यक्रम में डॉ. राजरूप फुलिया रिटायर्ड आईएएस पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा सरकार व टीम बदलाव के सभी सदस्य शामिल हुए।बदलाव सोशल सोसायटी हरियाणा को ऑनलाइन क्लासरूम बनाने के एलईडी डॉ. राजरूप फुलिया द्वारा उपलब्ध कराई गई है।

डॉ भीमराव अंबेडकर बहुआयामी प्रशिक्षण संस्थान कैथल भी पूरे हरियाणा के सरकारी स्कूल के बच्चों के शिक्षण स्तर में सुधार करने के लिए लगातार प्रयास करता रहेगा।

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । राजीव गांधी पंचायती राज संगठन में अमरजीत सिंह अजरावर को जिलाध्यक्ष, तेजपाल चौपड़ा ठसका अला को जिला उपाध्यक्ष व ज्ञान सिंह धुराला को ब्लाक अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। राजीव पंचायत राज संगठन में नियुक्त हुए सभी पदाधिकारियों ने नियुक्ति के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी, सांसद राहुल गांधी, राष्ट्रीय कांग्रेस की महासचिव एवं छत्तीसगढ की प्रभारी कुमारी सैलजा, राजीव गांधी पंचायती संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद मीनाक्षी नटराजन, राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर सुनील पंवार, हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी की सदस्य बिमला सरोहा का आभार जताया है। उन्होंने कांग्रेस के तमाम शीर्ष नेताओं का आभार जताते हुए विश्वास दिलाया है कि उन्हें जो जिम्मेवारी सौंपी गई है, वे उसे पूरी ईमानदारी के साथ निभाने का काम करेंगे और अधिक से अधिक लोगों को कांग्रेस पार्टी के साथ जोडने का प्रयास करेंगे। उनका प्रयास रहेगा राजीव गांधी पंचायती राज संगठन को मजबूती दी जाए और संगठन से जुड़ी तमाम गतिविधियां जनता तक पहुंचाई जाएं। सभी नियुक्त पदाधिकारियों का धुराला में आयोजित कार्यक्रम में स्वागत किया गया।

इस मौके पर ब्लाक समिति सदस्य अर्जुन सिंह, गुरमीत सिंह, रण सिंह गुज्जर, हाक्म गुज्जर,पलविन्दर सिंह, प्रताप सिंह, कुलविन्दर सिंह, सुरजीत सिंह, प्रधुमन सिंह, चीमा,गुरविंदर सिंह, संजू गुज्जर, प्रीतपाल, जरनैल सिंह, राम कुमार सरोहा,गुरजीत सिंह, राहुल मेंबर पंचायत, दविन्दर सिंह चीमा, महिन्द्र सिंह, प्रकाश कुमार मौजूद रहे।

रक्षाबंधन पर सरकार का महिलाओं को तोहफा हरियाणा रोडवेज की बसों में कर सकेंगी नि:शुल्क यात्रा

गजब हरियाणा न्यूज

कुरुक्षेत्र । विधायक सुभाष सुधा ने कहा कि सरकार ने महिलाओं को रक्षाबंधन का तोहफा देते हुए हरियाणा परिवहन की बसों में इस वर्ष भी मुफ्त यात्रा सुविधा देने का निर्णय लिया है ताकि बहनें अपने भाइयों के घर जाकर राखी बांध सकें।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने इस आशय के एक प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। विभाग द्वारा पिछले कई वर्षों से रक्षाबंधन के मौके पर महिलाओं को मुफ्त यात्रा सुविधा दी जा रही है। इस वर्ष भी पिछले वर्ष की भांति महिलाएं अपने 15 साल तक के बच्चों के साथ इस निःशुल्क यात्रा सुविधा का लाभ ले सकती है।

उन्होंने बताया कि यात्रा की सुविधा 29 अगस्त 2023 को दोपहर 12 बजे से आरंभ होगी तथा 30 अगस्त 2023 रक्षाबंधन के दिन मध्य रात्रि 12 बजे तक रहेगी। यह सुविधा साधारण व स्टैंडर्ड बसों में दी जाएगी।

प्रधानमंत्री द्वारा सागर में रखी गुरु रविदास धाम की आधारशिला से समाज गौरवान्वित : कटारिया

देश दुनिया के रविदासिया समाज में हर्षोल्लास की लहर

गजब हरियाणा न्यूज/जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के सदस्य सूरजभान कटारिया जोकि श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ संगठन के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री भी हैं ने कहा है की विश्व की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी और देश के सम्मानित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार देश के विरासत को संवारने का अद्भुत कार्य कर रही हैं। उसी संस्कृति को और समृद्ध करने के लिए गत दिवस प्रधानमंत्री मोदी ने मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक जिले सागर में 100 करोड रुपए की लागत से बनने वाले संत रविदास महाराज के धाम – समारक स्थल की नींव रखी और सार्वजनिक रूप से आयोजित देशभर के रविदासिया की सभा में प्रधानमंत्री मोदी ने यह वादा भी किया की उसके उदघाटन के लिए भी ज़रूर आएंगे। यह भव्य रविदास धाम पूरे देश के लिए सामाजिक समरसता और संत शिरोमणि गुरु रविदास जी के उपदेशों का तीर्थ स्थल बनेगा। मध्यप्रदेश के सागर में आयोजित सभा में शामिल होकर लौटे सूरजभान कटारिया ने आज यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि यह हम सब के लिए गौरवान्वित होने की बात है कि प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि वह संत शिरोमणि गुरु रविदास जी से प्रेरणा लेकर 'सबका साथ सबका विकास सबका

विश्वास और सका प्रयास 'की नीति के तहत कार्य आगे बढ़ा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि गत दिवस देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्यप्रदेश के सागर जिले में श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रविदासआचार्य सुरेश राठौड़ के सहित कई संतों के द्वारा विशेष पूजा अर्चना के बाद संत शिरोमणि गुरु रविदास जी के धाम स्मारक की आधारशिला रखी है। इस समस्त आयोजन में श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ संगठन की अहम भूमिका रही है और इनके देशभर से हजारों- लाखों की संख्या में कार्यकर्तागण वहां एकत्रित हुए हैं।

श्री गुरू रविदास धर्मस्थान सिरसगढ़ के स्थापना दिवस पर आयोजित हुआ कार्यक्रम

पुलिस की बदसलूकी से निराश होकर लौटे संतजन व साध–संगत

बोले : श्री गुरू रविदास जी से जुड़े धर्मस्थानों का जिस तरह से राजनीतिकरण किया जा रहा है उससे समाज कहीं न कहीं भ्रमित हो रहा है

गजब हरियाणा न्यूज/पूर्ण

अम्बाला, श्री गुरू रविदास धर्मस्थान सिरसगढ़ में 20वां स्थापना दिवस व अमर शहीद ब्रह्मलीन श्री–श्री 108 रामानन्द जी महाराज के 14वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। इस मौके पर भले ही मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने हजारो की संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि संतों का सानिध्य हम सबको आदिकाल से मिल रहा है और संतो के सानिध्य एवं प्रवचनों से व्यक्ति अच्छाई की ओर अग्रसर होता है। जो व्यक्ति विमुख होता है वह बुराई का रास्ता अपना लेता है। इसलिए मानव को संतो के चरणों में आसीन होकर उनके दिखाये गये रास्ते पर चलकर अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहिए। लेकिन सीएम साहब की उपस्थिति में डयूटी पर तैनात कर्मचारियों ने जिस तरह से संतों, श्रद्धालुओं और यहां तक कि मीडिया कर्मियों से बदसलूकी की उससे एक तरफ जहां सीएम साहब के अभिभाषण पर सवाल खड़ा हो रहा है वहीं श्री गुरू रविदास धर्मस्थान सिरसगढ़ की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्न चिन्ह लगना लाजमी है।

साध–संगत का कहना है कि जिस तरह से श्री गुरू रविदास धर्मस्थान सिरसगढ़ का राजनितिकरण किया गया है उससे समाज को कहीं न कहीं भ्रमित किया गया है वहीं बुद्धिजीवी लोगों का कहना है कि जिस तरह से श्री गुरू रविदास धर्मस्थान सिरसगढ़ का राजनितिकरण किया गया है यह सब श्री गुरू रविदास जी की विचारधारा के विपरीत है और इससे समाज को कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। कुछ श्रद्धालुओं ने यहां तक कहा की जिस तानाशाह सरकार ने गुरु रविदास जी महाराज के पुरातन अस्थान तुगलकाबाद मंदिर को तुड़वा कर कब्जाने का काम किया है और आज वो समारोहों में मुख्यातिथि बनाए जाते हैं। उन्होंने कहा की आज कुछ आश्रम आज गुरु रविदास जी और बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी के संघर्ष को समाप्त करने पर तुले हैं। जिन लोगों ने हमारे हकों को खत्म करने की ठानी हुई है और लगभग खत्म कर भी दिया है उन्ही की जी हजूरी करते हैं। बुद्धिजीवी लोगों का कहना है कि हालात ये बता रहे है कि डेरों व धर्मस्थानों को चलाने वालों ने सरकार में बैठे सत्तासीन लोगों को सिर्फ अपने तक ही सीमित कर लिया है जिससे समाज को मिलने वाली सरकारी सुविधाओं पर ग्रहण लगा दिया है।

मुख्यमंत्री ने इस मौके पर धर्म स्थान सिरसगढ़ में निर्माण कार्यों के लिए 21 लाख रूपये तथा आज यहां पर आयोजित कार्यक्रम के लिए संत महापुरूष सम्मान एवं विचार प्रसार योजना के अंतर्गत 11 लाख रूपये की राशि देने की घोषणा की। इसके अतिरिक्त उन्होंने सिरसगढ़ धर्मस्थान के पदाधिकारियों की मांग पर सुरक्षा की दृष्टि से आज से ही यहां पर पांच पुलिस कर्मियों की गार्द लगाने, एनएचएआई से सम्बन्धित कार्यों के लिए केन्द्र सरकार को पत्र लिखने की बात कही। इसके साथ–साथ इस धर्मस्थान के जो कार्य मुलाना ग्राम पंचायत से सम्बन्धित हैं उन्हें भी प्राथमिकता के आधार पर करने बारे कहा।

उन्होंने जिला प्रशासन के अधिकारियों को भी कहा कि वे सिरसगढ़ धर्मस्थान के सामाजिक कार्यों को देखते हुए यहां के जो भी कार्य प्रशासन से सम्बन्धित हैं, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर करवाएं। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी यदि सिरसगढ़ धर्मस्थान की तरफ से जो भी बात उनके संज्ञान में लाई जायेगी उसमें उनका सहयोग किया जायेगा। मुख्यमंत्री ने अमर शहीद रामानंद जी महाराज को श्रद्धांजली भी दी तथा श्री गुरू रविदास धर्मस्थान सिरसगढ़ के 20वें स्थापना दिवस की श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर महाराज निरंजन दास ने मुख्यमंत्री व अन्य वशिष्ठ अतिथियों को शाल तथा संत गुरू रविदास जी का स्मृति चिन्ह देकर उनका स्वागत किया व उन्हें आर्शीवाद दिया।

मुख्यमंत्री ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरूओं एवं संतों के द्वारा ही सही शिक्षा और सही संस्कार व्यक्ति को मिलते हैं जिससे वह देश का एक अच्छा नागरिक बनकर समाज कल्याण के लिए काम करता है और यह सब संतो के सानिध्य में रहकर प्राप्त किया जा सकता है। उन्होने कहा कि श्री गुरू रविदास की शिक्षाएं किसी समुदाय अथवा जाति विशेष के लिए नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है। इन्होंने सैंकड़ो वर्ष पूर्व मानवता के सही मार्गदर्शन के लिए जो संदेश दिया था वह आज भी पूरी तरह सार्थक है तथा हमें अपने महापुरूषों के दिखाये गये रास्ते पर चलकर जीवन में आगे बढना है। उन्होंने कहा कि किसी भी समाज व प्रदेश के निर्माण के लिए शिक्षित होना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार हरियाणा एक हरियाणवी एक भावना के साथ सभी वर्गों के उत्थान के लिए काम कर रही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार संत महापुरूष सम्मान एवं विचार प्रसार योजना के अंतर्गत संतो महात्माओं के दिवस मना रही है जिससे कि लोगों को संतो–महापुरूषों के जीवनी से प्रेरणा मिले। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर कहा कि भारतीय जनता पार्टी व सरकार ने संतो का मान–सम्मान बढ़ाने का काम किया है तथा डॉ. भीम राव अम्बेडकर जयंती, महर्षि वाल्मीकि जयंती, गुरू रविदास जयंती, कबीर जयंती को सरकारी तौर पर मनाया गया है। सरकार द्वारा हर वर्ग के कल्याण के लिए योजनाएं लागू की गई हैं।

अम्बाला शहर के विधायक असीम गोयल ने कहा कि मौजूदा सरकार मुख्यमंत्री मनोहर लाल के कुशल नेतृत्व में भगवान गुरू रविदास द्वारा दिखाये गये मार्गदर्शन में चलते हुए हर वर्ग के लिए बेहतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में भ्रष्टाचार व भेदभाव को समाप्त किया है। उन्होंने कहा कि अंतोदय की भावना के अनुरूप सरकार काम कर रही है। विधायक ने यह भी कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल एक संत रूपी व्यक्ति हैं और अंतोदय की भावना के अनुरूप पंक्ति में खडे अंतिम व्यक्ति के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होने यह भी कहा कि सिरसगढ़ धर्मस्थान के पदाधिकारियों द्वारा जो भी कार्य उन्हें बताया जायेगा वे तथा उनकी टीम उनके साथ हमेशा खड़ी है।

इस अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य बंतो कटारिया ने कहा कि श्री गुरू रविदास ने समाज की समानता, सभी वर्गों की खुशहाली और छुआ–छात व जात–पात रहित जिस समाज की कल्पना की थी उसे पूरा करने का कार्य केन्द्र व राज्य सरकार कर रही है। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संत मनदीप दास जी ने साध–संगत से आहवान किया कि वे संत गुरू रविदास जी द्वारा बताए गये मार्ग पर चलें और नशे आदि सामाजिक बुराईयों से दुर रहें। उन्होंने हरियाणा के मुख्यमंत्री द्वारा नशे की रोकथाम तथा समाज कल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आज यहां पर जो साध संगत आई है, वह यह प्रण लेकर जाएं कि वे नशे के विरूद्ध लोगों को जागरूक करेंगे और जो लोग नशे की प्रवृति में लिप्त हैं उन्हें नशे से दूर रहने बारे प्रेरित करेंगे।

इस अवसर पर डॉ अशोक तंवर पूर्व सांसद, प्रदीप नरवाल राष्ट्रीय सचिव सीआईसीसी, चंद्रशेखर आजाद संस्थापक भीम आर्मी, मनजीत नौटियाल राष्ट्रीय अध्यक्ष भीम आर्मी,संत बीरसिंह हितकारी जी महाराज, डेरा बाबा लालदास कपालमोचन के महंत संत निर्मलदास जी महाराज सहित दर्जनों महानुभावों ने संबोधित किया।

इस मौके पर संत जैन दास जी महाराज दयालगढ़, संत गुरपाल जी महाराज, संत सतपाल दास चहाड़वाला समेत अनेक संतजन, मंडलायुक्त रेणू एस फूलिया, उपायुक्त डॉ. शालीन, पुलिस अधीक्षक जशनदीप सिंह रंधावा, एसडीएम बिजेन्द्र सिंह, भाजपा जिला प्रधान राजेश बतौरा, पूर्व विधायक राजबीर सिंह बराड़ा, सिरसगढ़ धर्मस्थान से जोगिन्द्र पाल, परमिन्द्र कुमार, धर्मपाल, एन.डी चीमा, के.एल सरोए, अमित कुमार मल, हरदेव राम जी, पूर्व मेयर रमेश मल, पूर्व विधायक अनिल धंतोड़ी, भाजपा एससी मोर्चा जिला प्रधान संजीव पंजलासा के साथ–साथ भारी संख्या में साध–संगत मौजूद रही।

परमात्मा एक परम चैतन्य हस्ती : स्वामी ज्ञाननाथ

कहा: जो एक संकल्प मात्र से ही है सारी सृष्टि के प्रपंच की संरचना कर देता है

गजब हरियाणा न्यूज/राहुल

अम्बाला। । निराकारी जागृति मिशन नारायणगढ़ के गद्दीनशीन चेयरमैन और संत सुरक्षा मिशन भारत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर एडवोकेट स्वामी ज्ञान नाथ ने कहा कि सबसे पहले सृष्टि की रचना करने वाला, परवरिश करने वाला और संहार करने वाला उसके बाद में अखिल ब्रह्मांड का सारा प्रपंच। यह एक बहुत ही गंभीरतापूर्वक विचार करने का विषय है कि ऐसा भी समय था जब अखिल ब्रह्मांड में ना पृथ्वी थी, ना जल था, ना वायु थी, ना आकाश था। ना कोई गुरु था, ना कोई शिष्य था। ना कोई सुनने वाला था, ना कोई सुनाने वाला था, ना कोई देखने वाला था, ना ही कुछ दिखने वाला था ना कोई लिखने वाला था, ना कोई पढ़ने वाला था, न कोई देवी थी, ना कोई देवता था, ना ब्रह्मा, विष्णु और महेश थे, ना कोई वेद– शास्त्र था, न कोई उपनिषद और पुराण था। ना कोई पंथ था, ना कोई ग्रंथ था। तब भी यह यह मालिकेकुल जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार परमात्मा अपने आप मे स्वयं विद्यमान था। महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ ने कहा कि इसी की मौज से सबकुछ होता है और होता रहेगा। यह परमात्मा एक ऐसी परम चैतन्य हस्ती है कि एक संकल्प मात्र से ही है सारी सृष्टि के प्रपंच की संरचना कर देता है और एक संकल्प मात्र से ही सारी सृष्टि की रचना को अपने आगोश में समा लेता है। कैसी अद्भुत परमात्मा की विडंबना है और काल बलि की त्रिगुणात्मक माया का प्रबल प्रभाव है कि आज के भौतिकवाद, पदार्थवाद और स्वार्थ वाद के चलते दौर में आज का मानव सच को ना जानना चाहता है,ना पहचाना चाहता है, ना सच बोलना चाहता है, ना सच सुनना चाहता है, ना सच देखना चाहता है और ना ही सच के मार्ग पर चलना चाहता है। क्योंकि सच को धारण करना और सच का जीवन मे अनुसरण करना उतना आसान नही जितना पढने और सुनने मे आता है। महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज ने कहा कि अब यह जानना होगा कि वह सच क्या है, कहां रहता है, कैसा है और अगर जानना चाहें तो कैसे जाना जा सकता है। अगर ज्ञान और विवेक की दृष्टि से देखा जाए तो सच सिर्फ और सिर्फ अखिल ब्रह्मांड के कण–कण मे कायम–दायम, ओत–प्रोत, रोम–रोम मे रसा और बसा हुआ, हमेशा अंगसंग यह जय श्री प्रियतम निर्गुण निराकार एंव सर्वाधार परमात्मा है जिससे सब कुछ प्रकट होता है, जिसमें सबकुछ स्थिर रहता है और कुछ समय क्रीड़ा करने के बाद जिसमें सबकुछ विलय हो जाता है। यह सत चेतन और आनंद स्वरूप परमात्मा हमेशा ज्यों का क्यों रहता है, अपने आप में स्वतंत्र है, अग्नि से जलता नहीं है, पानी से गलता नहीं है, हवा से उड़ता नहीं, अस्त्र–शस्त्र से कटता नहीं है, बाहरी और आंतरिक किसी भी रिद्धि–सिद्धि शक्ति से प्रभावित नहीं होता। यह सब को प्रभावित कर देता है परंतु किसी के द्वारा यह प्रभावित नहीं होता। सब को बदल देता है परंतु स्वयं आप अपरिवर्तनशील रहता है, सबके साथ रहता हुआ भी सबसे अंसग रहता है। सबकुछ करता हुआ अकर्ता रहता है। किसी जैसा कोई हो सकता है परंतु परमात्मा जैसा कोई नहीं हो सकता। परमात्मा तो सिर्फ परमात्मा ही है और अनादि काल से जैसा था वैसा ही है और भविष्य मे भी वैसा ही रहेगा। महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञान नाथ जी महाराज ने आहवान किया कि आओ आज हम सब मिलकर संकल्प करें और बाहरमुखी अनाप–शनाप निरर्थक कर्मकांड, लौकिक वर्णनात्मक शब्दों के आधार पर निरर्थक बहसबाजी, जाति, धर्म, वर्ण,मजहब, संप्रदायवाद, बहुदेववाद, मन और मत के भेद भाव, मूढ मान्यताओं को छोड़कर एक को जानो, एक को मानो और एक हो जाओ तभी वास्तविकता प्रकट होगी और मनुष्य जीवन सार्थक सिद्ध होगा, भगवत प्राप्ति का

सपना साकार होगा, परमात्मा का साक्षात्कार होगा, प्रत्यक्ष मे दर्शन दीदार होगा और अंततः मनुष्य जीवन मंगलमय होगा।

सभी देश व प्रदेश वासियों को हमारी और से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री मनोहर लाल खट्टर
मुख्यमंत्री

श्री अनिल विज
स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा सरकार

श्री नायब सिंह सैनी
सांसद

श्री सुभाष सुधा
विधायक

संदीप सिंह
राज्य खेल मंत्री

डा0 पवन सैनी
पुर्व विधायक, लाडवा

श्री मेवा सिंह
विधायक लाडवा

श्री शांतनु शर्मा
उपायुक्त महोदय, कुरुक्षेत्र

श्री सुरेन्द्र भौरिया
पुलिस अधिक्षक, कुरुक्षेत्र

डीएसपी सुभाष चन्द

डॉ कृपा राम पुनिया,पूर्व मंत्री
एवं सेवानिवृत आईएएस

डॉ आर आर फुलिया, पूर्व एसीएस
(आईएएस) एवं पूर्व वाइस चांसलर

एन आर फुले, डिप्टी कमिश्नर (जीएसटी)

केशव ढांडा,चेयरमैन, ग्लोबल
रविदासिया वेलफेयर एसोसिएशन

N.R Phullay, Advocate Suman Phullay

डॉ रामभक्त लांगयान, सेवानिवृत आईएएस

डॉ रणजीत सिंह फुलिया, पूर्व इंस्योरेंस ऑफिसर

सुखदर्शन रंगा, पूर्व जिला राजस्व अधिकारी

बनारसी दास,पूर्व बैंक अधिकारी

बिमला सरोहा ,सदस्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी

बलवान सिंह बाबियान, राष्ट्रीय अध्यक्ष, संपादक एसोसिएशन

राजीव गोयल,पूर्व जिला उप अध्यक्ष युवा कांग्रेस

धर्म पाल मथाना, सचिव, पिपली अनाजमंडी
आढती एसोसिएशन।

धर्मसिंह बुक्कल,पूर्व सिनियर डिविजनल
अकाउंट ऑफिसर

डॉ कपूर सिंह,पूर्व अधीक्षक अभियंता

गुरदयाल सिंह,संस्थापक, कुरुक्षेत्रा दर्शन

सुरेश युनिसपुर, सदस्य, प्रदेश कांग्रेस कमेटी

रीना बाल्मिकी, कार्यकारी चेयरमैन एससी विभाग, कांग्रेस

जरनैल सिंह रंगा, संपादक गजब हरियाणा एवं
अध्यक्ष, सृष्टि एजुकेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट

बाबूराम तुषार,अध्यक्ष, मिडिया वेलफेयर कल्ब

पवन चौधरी,वरिष्ठ कांग्रेस नेता

महीपाल फुले,समाजसेवी

नरेंद्र घूमसी,वरिष्ठ पत्रकार उप संपादक गजब हरियाणा

अमित बंसल पत्रकार, चरौंडा

अनिल रंगा एडवोकेट एवं सदस्य गुरु रविदास
मंदिर एंड धर्मशाला सभा कुरुक्षेत्र

सुरजभान नरवाल,प्रधान, गुरु रविदास
मंदिर एवं धर्मशाला सभा कुरुक्षेत्र

सुरेन्द्र सैनी,वरिष्ठ कांग्रेस नेता

संदीप गर्ग लाडवा समाजसेवी

देसू राम, डाक अधीक्षक कुरुक्षेत्र मंडल

लखमी चंद पुनिया, प्रदेश अध्यक्ष,मिशन सुरक्षा
परिषद हरियाणा

एडवोकेट जसमेर सोलखे
एडवोकेट कुलवंत सिंह

रविंद्र कुमार पत्रकार

सुखबीर सिंह पत्रकार यमुनानगर

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा ढिंगंरा प्रिटिंग प्रैस, अग्रसैन चौंक, मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं0 890 पी, सैक्टर-4, अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (91382-03233) **Registration Namber : HAR/HIN/2018/77311**